AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWSLETTER OCTOBER 2017

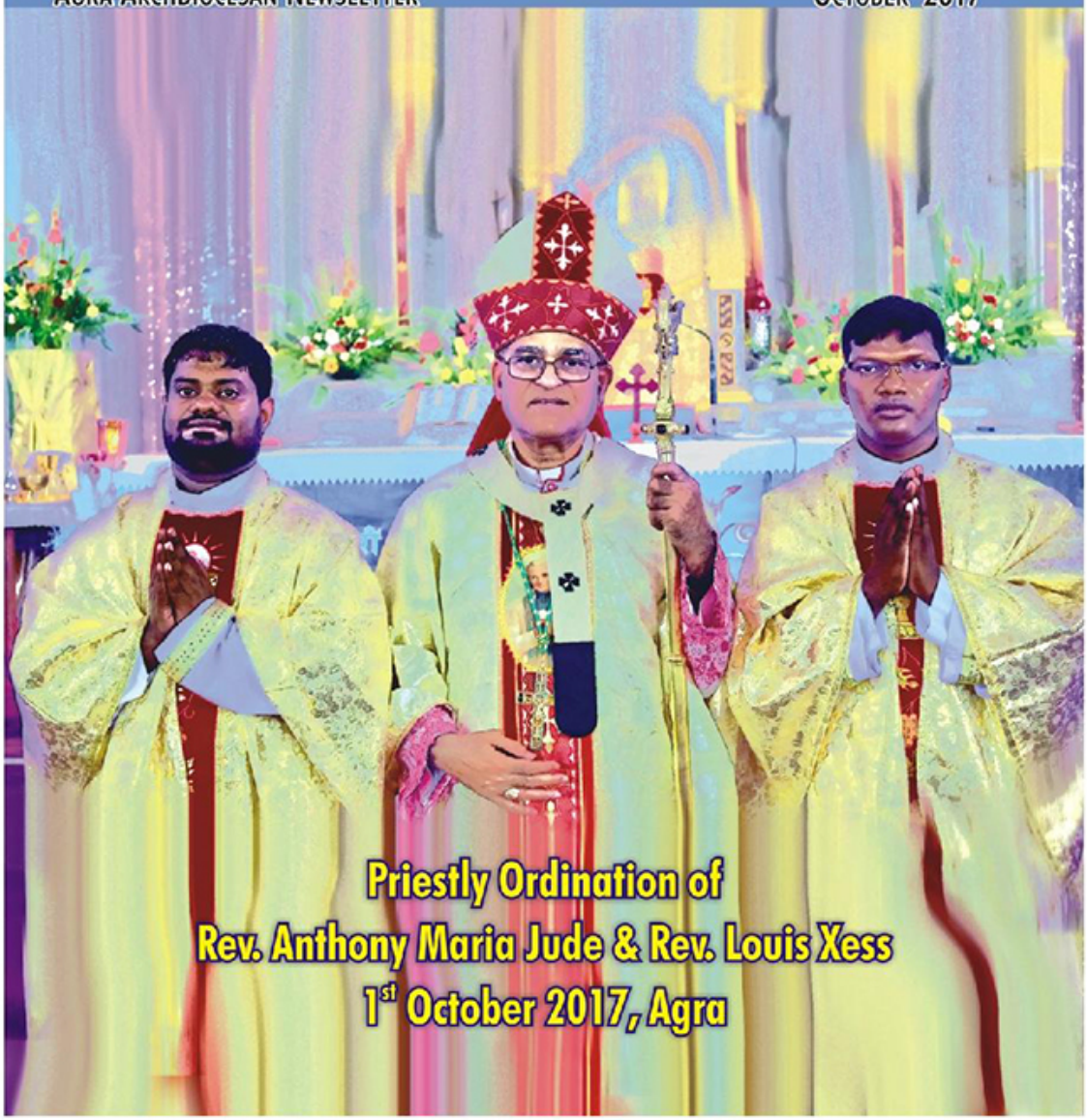

Priestly Ordination of
Rev. Anthony Maria Jude & Rev. Louis Xess
1st October 2017, Agra

Priestly Ordination of Rev. Jude & Rev. Louis, 1 Oct 2017
A Glimpse...

Public Reception of Newly Ordained Priests, St. Peter's College, Agra

Welcome Home!

Fr. Tom... A Miracle
Ghar Wapsi...

Unforgettable...

Rev. Fr. Anthony P. (TOR)
(1 Sep 1952 - 15 Sep 2017)
Khoda Village, Noida

Santan Miranda
(25 July 1940 - 17 Sep 2017)
St. Patrick's Church, Agra

Editorial

प्रिय मित्रों, अब हम 74 हैं। जी हाँ, दो नए उपयाजकों के अभिषेक से हम धर्मप्रांतीय पुरोहितों की संख्या बढ़कर 74 हो गई है। श्रद्धेय जूड मरिया एन्थोनी (बंगलूरू) और श्रद्धेय लुईस खेस (उड़ीसा) के **पावन पुरोहिताभिषेक** से अब हम 74 हो गए हैं। अब तक 72 थे। इसके अलावा माइनर सेमीनेरी में 19 तथा विभिन्न मेजर सेमीनेरियों में सैंकड़ों छात्र अध्ययन कर रहे हैं। रविवार 1 अक्टूबर को उन्हें सभी मिशनों की संरक्षिका बाल येसु की संत तेरेसा के महापर्व पर धर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा ने महाधर्मप्रांत आगरा के विशाल मिशन के लिए पावन पुरोहित अभिषिक्त कर लोकार्पित कर दिया। महापुरोहित हमारे दोनों नवाभिषिक्त पुरोहितों की रक्षा करे और उनके पुरोहितिक जीवन में सदा मार्गदर्शन करे। ऐसी हमारी आशा है। उनकी अभिषेक धर्मविधि के अवसर पर महाधर्माचार्य ने एक सारगर्भित उपदेश दिया और नवाभिषिक्तों को पुरोहितिक जीवन की गंभीरता, पवित्रता और जिम्मेदारियों के प्रति आगाह किया।

गत माह हमारे कई विद्यालयों/गिरजाघरों में **मातृ दिवस** एवं **विश्व कन्या दिवस** मनाकर कन्याओं और माताओं का समुचित सम्मान किया गया, जिसकी वे हकदार हैं। साथ ही बहुत से स्कूलों/कॉलेजों में **हिन्दी दिवस (सप्ताह)** मनाकर हिन्दी भाषा के प्रति जागरुकता व हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने की बात पर बल दिया। सेंट जॉन पॉल स्कूल, फतेहाबाद, जीसस एण्ड मेरी स्कूल, ग्रेटर नोएडा तथा सेंट एन्थोनी जू. कॉलेज, आगरा में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विशेष सभाएं, भाषण व वाद विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। उनकी सचित्र रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही है।

हमारा भारतवर्ष विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों और भाषाओं का देश कहलाता है। यहाँ की विभिन्नता में अभिन्नता नजर आती है। संपादकीय लिखे जाते समय हमारे कुछ मुस्लिम भाइयों ने अपने घरों में ताज़िए रखे हैं तो वहीं उनके पड़ोस में हिन्दू भाइयों ने अपने घरों/मन्दिरों में माता की मूर्ति सजा रखी है। हिन्दू, मुस्लिम भाईचारे का इससे बढ़कर उदाहरण और कहाँ मिलेगा!

अब बात आती है - रावण दहन की! हम कहाँ से रावण जलाने की शुरुआत करें। हर मानव के भीतर अत्याचार, अनाचार, अधर्म, अनैतिकता और भ्रष्टाचार का एक रावण घर किए बैठा है। हम पहले उसे निकालने/जलाने की बात करें, तभी बाहरी पुतले को जला सकते हैं, अन्यथा यह केवल एक औपचारिकता मात्र है। इस वर्ष **दीपावली** पर जब हम दीप जलाएं, तो ज्योति के ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह अंधकार पर प्रकाश की विजय होने दे। हर ओर ईश्वर की जीवन ज्योति चमके! उसकी ज्योति से हम सभी प्रकाशित हो जाएं!!

दो तारीख को राष्ट्रपिता **महात्मा गाँधी (बापू)** की जयंती है। बापू हमें सिखाते हैं, कि किसी भी व्यक्ति की महानता उसकी सज्जनता में निवास करती है। केवल चलाने से कोई बड़ा नहीं बन जाता। यह तो 'फटा पोस्टर, निकला जीरो' के समान है। उसी दिन हम संरक्षक दूतों का त्योहार भी मनाते हैं, जो हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर ने हमें अनाथ नहीं छोड़ा है। हमारी देखभाल/सुरक्षा के लिए संरक्षक दूत बनाए हैं।

7 तारीख को **माला विनती** की धन्य कुँवारी मरिया का पर्व है। यह उस माता का पर्व है, जो हमें याद कराता है कि माँ मरिया के 'हाँ' कहने से प्रभु येसु इस दुनिया में आए। वह सलीब के नजदीक हमारी उपस्थिति दर्ज कराती है। वह आज भी निरन्तर प्रभु ईश्वर के सामने अपने दो कोमल हाथ जोड़कर खड़ी रहती है और हमारी सुख-समृद्धि के लिए लगातार प्रार्थना करती है। माला विनती के त्योहार के दिन अधिक से अधिक माला विनती प्रार्थना बोलने से बढ़कर क्या तोहफा हम उसे दे सकते हैं।

2 तारीख को ही यूनाइटेड क्रिश्चियन प्रेयर फॉर इण्डिया की ओर से फेथ चर्च, आगरा में शाम 4-6 बजे तक एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया जा रहा

है, तब हम अपने देश के सर्वोच्च अधिकारियों, मंत्रियों व जिम्मेदार लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं। आप भी कोसने के बजाय उनके लिए प्रार्थना करें।

रविवार 22 अक्टूबर को पड़ने वाला विश्व मिशन रविवार हमें याद दिलाता है कि हम लेने के बजाय देना सीखें। हमने बहुत कुछ पाया है, अब वक्त आ गया है, कि हम दूसरों की और जरूरतमंदों की मदद करें। उन्हें दान दें।

27-28 तारीख को राइज़ अप इण्डिया-2017 (3) म्यूजिक रॉक फेस्टीवल के माध्यम से एक बार पुन: हमारे मसीही युवाओं में भक्ति गीत-संगीत के माध्यम से मसीही जोश और प्रभु-वचन के प्रति उत्साह भरने का प्रयास किया जा रहा है। आप भी इसमें शरीक हों।

जीसस एण्ड मेरी धर्मसंघ की स्थापना के 200 वर्ष पूरे हो रहे हैं। उन्हें बधाई और उनके द्वारा निर्धन वर्ग की कन्याओं/महिलाओं की गरिमा व शिक्षा हेतु किए जा रहे सभी प्रयासों के लिए उन्हें साधुवाद एवं धन्यवाद।

अक्टूबर व नवम्बर महीनों में हमारे बहुत से विद्यालय अपना वार्षिक दिवस मनाते हैं। आशा की जाती है, कि इन अवसरों पर सुसमाचार पर आधारित मूल्यपरक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

हमारे कुछ पुरोहितों ने वार्षिक चुप्पी (आध्यात्मिक साधना) में भाग ले लिया है। शेष 14-22 तारीख तक साधना में होंगे। उनके लिए आपकी प्रार्थनाओंकी दरकार है। आपके पत्रों, सुझावों का हमेशा स्वागत है।

ख्रीस्त में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस

(कृते, अग्रेडियन्स सम्पादकीय मण्डल)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (OCTOBER - 2017)

5 Receiving of RJM Mother General and Delegates, Church of Pieta (Akbar Church)
6 Holy Mass for CJM Congregation, Agra-200 Years of Foundation, 175 years arrival in India
7 Visit to St. Lawrence Minor Seminary, Agra
8 Blessing of the Foundation Stone, Priests' House, Bastar; Holy Mass, Feast of the Holy Rosary, Bastar
10 Welcome to the Superior General of the Oblates of St. Francis de Sales
12 Visitation of St. John's School, Firozabad Holy Mass, Our Lady of Pilar (SFX), Dholpur
13 Holy Mass, Feast of Our Lady of Fatima, Fatima Convent, Agra
14 FSLG Sisters' Convent blessing at Gulauti
15 Archdiocesan Day on the Family, Pastoral Centre. Agra Priest's Annual Retreat - 2nd batch
20 Conclusion of Priests' Retreat
23 Visit to Delhi
25 Regional Animation Programme for Priests Departure to Bareilly-Kathgodam
26 Holy Mass, Sacerdotal Golden Jubilee, Diocese of Bareilly, Kathgodam
27 Arrival in Agra
29 Archdiocesan Pastoral Council Meeting, Pastoral Centre, Agra i Holy Mass, Feast of St. Jude, Kaulakha, Agra
30 Archdiocesan Consultors' Meeting

REGIONAL YOUTH CONVENTION

The next RYC is being organised from 29th Sept to 2nd Oct 2017, at St. Anslem's School, Jaipur The theme is 'Grow in Faith - Live Faith'. This year along with Fr. Dominic George (Diocesan Youth Director) & Sr. Deodita, PSOL (Diocesan Youth Lady Animator) 35 youth from various parishes, missions and institutions are participating in it. Please keep them in your valuable prayers, that they may have a growing experience of faith.

– Team Agradiance

Shepherd's Voice

"The Church a Communion and Mission"

The Church is the "sign and sacrament of salvation". The Church is the communion of faith and missionary by nature. Faith experience, faith expression and faith proclamation are central to Christian mission. Christian mission consists in living one's faith in Christ and witnessing to the same in the midst of the world and in the life context of people.

The month of October announces Mission Sunday which falls on October 22nd this year. It is Pope Pius XI in 1926 who announced World Mission Sunday based on the missionary mandate given by Jesus Himself: "Go therefore and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father, and of the Son, and of the Holy Spirit, teaching them to observe all that I have commanded you" (Mt. 28:19-20). This is the missionary command to spread the Good News of Salvation through faith in Jesus. To go and to proclaim the Good News to all, in all times, in all places, in all one's life, is the command. The truth of the Good News is that God loves the world, He loves all and He invites us to love Him above all and to love our neighbor as we love ourselves. Mission is an ongoing movement of reaching out to one another with the love and compassion of Christ through forgiveness, reconciliation, peace and service. This is the process of exercising justice, peace and. fellowship among all and thus experiencing God's own rule over one's life. This is the experience of God's Kingdom, Jesus proclaimed: "Repent and believe in the Kingdom!"

As much as the power of evil spreads around unabatedly, the Power of Good by one's personal repentance, penitential spirit, acts of penance, reconciliation and loving service can overcome evil of all kinds. Therefore, Christian mission in our times takes a new turn of courageously fighting evil with the power of forgiving love of Good by the goodness of one's heart, rejecting all forms of evil, immoral and corrupt practices. Where sin abounds, the grace of God abounds all the more.

St. Therese of the Child Jesus, whose feast we celebrate on October 1st, is the Patroness of the missions along with St. Francis Xavier. Her life is an inspiration to draw more and more people to Christ. For, she said, "There is just one thing to be done here below: to love Jesus and to save souls for Him, so that He may be more loved"! Her childlike simplicity, utter humility, constant self-sacrifice and a boundless love of God and trust in Him were some of her most outstanding virtues any Christian can imitate. She offered it all for the conversion of sinners and the salvation of souls. Her "little

way" of performing small duties with greatest love of God, is worth imitating, in order to defeat the power of evil that prompts power, pride, riches and honour. The mission proper is to draw more and more people to repentance of the wrong and leading them to righteousness, reconciliation and peace.

Mission in modern times consists in countering materialism, consumerism, utilitarianism, that tend to exclude God and religion, principles of justice, ethics and morality. It consists in the concern of the marginalized, victims of injustice, violence, terrorism, ethnic and caste bias. Causing the change of heart of terrorists, criminals, violent, corrupt, addicts and immoral persons so that they may change their lives and spread goodness, justice, peace and fraternity.

World Mission Sunday observed every year is meant to sensitize all Christians of the necessity and urgency to generously contribute towards the works of alleviating the suffering of the others, to support human development projects. It is this mission that is at the heart of Christian faith. By being kind, generous and selfless in service, one expresses one's solidarity with the brothers and sisters who are in greater need.

With our special prayers offered on Mission Sunday, we join the missionaries in the field of service, we feel a sense of communion and compassion, and find ways of supporting them in the task of spreading the Good News through humanitarian services.

Mission, witnessing and evangelization go together and are summed up in concrete acts of supporting the common cause of the Church spread world over. This is known as Universal Solidarity Fund that is regulated by the Pontifical Missionary Organization (PMO), consisting of Holy Childhood Society, Society of Propagation of Faith and Society of Sts. Peter and Paul.

While Missionary Society of Holy Childhood aims at animating children to reach out to children, the Society for the Propagation of Faith deals with general purpose of maintaining missionary endeavours and services carried out by the frontier (men and women) missionaries and catechists. The Society of Sts. Peter and Paul reaches out to the Formation Houses and Seminaries.

Mission Sunday collections pooled together are meant to support poorer territories, Dioceses and institutions, of which the Archdiocese of Agra has been a beneficiary all along. Mission Sunday collections form the part of the Universal Missionary Fund. Reaching out to the temporal needs of the people is an integral part of the missions - to reach out to the least and the last with corporal works of mercy. Pope Francis explains that "it is the most precious service that the Church can render to humanity and to all individuals who are seeking the profound reasons to live their life to the full". However, if the teaching, the life, the promises, the Kingdom and the mystery of Jesus of Nazareth, the Son of God, are not proclaimed, there is no true evangelization. Christ is at the centre of the Church. Mission is central to the Church. Therefore, the mission of Christ and Christ is of the mission

of God, loving and saving humanity and the world.

Mission Sunday collections and the generous contributions and offerings made for the missions go a long way to support the activities of the Church.

May God bless you.

✠ **Albert D'Souza**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

"कलीसिया समुदाय और मिशन है।"

कलीसिया मुक्ति का चिन्ह और संस्कार है। कलीसिया अपने स्वभाव से विश्वास का समुदाय और मिशनरी है। विश्वास का अनुभव, विश्वास का प्रगटीकरण और विश्वास की घोषणा ख्रीस्तीय विश्वास का आधार (केन्द्र) है। ख्रीस्तीय मिशन ख्रीस्त में विश्वास करने और उसे प्रतिदिन जीने में तथा संसार में लोगों के सामने साक्षी देनें में निहित है।

अक्टूबर महीना मिशन रविवार की घोषणा करता है। इस वर्ष हम **मिशन रविवार 22 अक्टूबर** को मनाएंगे। संत पिता पीयुस ग्यारहवें ने वर्ष 1926 में ख्रीस्त के मिशनरी आदेश का पालन कर **मिशन रविवार** की घोषणा की थी। प्रभु येसु ख्रीस्त ने स्वयं हमें यह आदेश दिया है कि, "इसलिए तुम लोग जाकर सब राष्ट्रों को शिष्य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो। मैंने तुम्हें जो-जो आदेश दिये हैं, तुम लोग उनका पालन करना उन्हें सिखलाओ (मत्ती 28:19-20)। यह मिशनरी आदेश हमें मिला है, कि प्रभु में विश्वास के साथ-साथ मुक्ति का शुभ संदेश सबको सुनाओ। हमें यह आदेश दिया गया है, कि हम अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में सब जगह जा जाकर हम समय, हर स्थान पर मुक्ति का शुभ सन्देश सबको सुनाएं। शुभ सन्देश की सच्चाई यह है कि ईश्वर सारी दुनिया से प्रेम करता है। वह सबसे प्यार करता है, और हमें आमंत्रित करता है, कि हम भी उसे सबसे पहले और सबसे अधिक प्रेम करें, साथ हम अपने समान अपने पड़ोसी से भी प्रेम करें। मिशन एक लगातार (सतत्) चलने वाला आन्दोलन (प्रक्रिया) है, कि हम पाप क्षमा, मिलनसारिता, शांति और सेवा के द्वारा ख्रीस्त की करूणा (दया) को एक दूसरे के साथ बांटे। यह सबके साथ न्याय, शांति और भाईचारे की एक प्रक्रिया है और इस प्रकार हम ईश्वर के नियम को अपने ऊपर लादते हैं अथवा अपना जीवन उसे चलाने देते हैं। यह ईश्वरीय राज्य का अनुभव है। प्रभु येसु कहते हैं, "पश्चाताप करो और स्वर्गराज्य में विश्वास करो।"

जैसे-जैसे शैतान (बुराई) की शक्ति बढ़ती जाती है, वैसे ही हमारे व्यक्तिगत पश्चाताप, भाईचारे और प्रेम व सेवा की शक्ति से इस पर नियंत्रण (विजय) प्राप्त की जा सकती है। इस तरह हमारे अपने समय में ख्रीस्तीय मिशन पाप (या बुराई/अधर्म) की शक्ति का साहसपूर्वक करने, ईश्वर के प्रेम की शक्ति से प्रेरित होकर अपने अपराधियों को सारे हृदय से क्षमा करने, हर प्रकार की अनैतिक और भ्रष्टाचारी व्यवस्थाओं को नकारता है। उनका विनाश करता है। जहां पाप बढ़ता है, वहां ईश्वर की कृपा भी बहुतायत से बढ़ती जाती है।

बाल येसु की संत तेरेसा, जिनका पर्व हम **पहली अक्टूबर** को मनाते हैं, संत फ्रांसिस ज़ेवियर के साथ सभी मिशन की संरक्षिका हैं। उनका जीवन अधिक से अधिक लोगों को ख्रीस्त की ओर आकृषित करता है। इसीलिए उन्होंने कहा है, "यहां नीचे (पृथ्वी पर) केवल एक ही काम करना है, येसु से प्रेम करना है और उसके लिए आत्माओं को जीतना, ताकि उसे अधिक से अधिक प्रेम मिले।" शिशु समान उसकी सरलता, विनम्रता, निरत परित्याग और ईश्वर से असीमित प्रेम उसमें विश्वास

उनके कुछ गुण हैं, जिनका हम (ख्रीस्तीय) अपने जीवन में पालन (अनुशीलन) कर सकते हैं। ईश्वर के महानतम प्रेम के लिए किए गए छोटे-छोटे काम अर्थात् उनकी छोटी सेवाओं के द्वारा हम संसार में व्याप्त अधर्म, घमण्ड, धन धनाड्य के प्रति बेहिसाब आकर्षण पर विजय पा सकते हैं। मिशन का मुख्य उद्देश्य है कि अधिक से अधिक लोगों को प्रायश्चित करने के लिए प्रेरित किया जाए और उन्हें धार्मिकता, प्रायश्चित और शांति के मार्ग पर चलने का आह्वान किया जा सके।

वर्तमान काल में मिशन का मुख्य काम है, भौतिकवाद, उपभोगवाद, उपभोक्तावाद जो हमें ईश्वर और धर्म से परे ले जाते हैं, उनका सामना (विरोध) करना। वे हमें न्याय व नैतिकता के नियमों से दूर करते हैं। यह हाशिये के किनारे पर निवास करने वाले, अन्याय, घृणा, आतंकवाद और जातिवाद के शिकार लोगों का साथ देना, उन्हें संबल बनाना मिशन का दायित्व है। यह आतंकवादियों, अपराधियों, नफरत, भ्रष्टाचार, अनैतिक लोगों को मन परिवर्तन के लिए प्रेरिता करता है, कि वे मन परिवर्तन कर अच्छाई, न्याय, शांति और भाईचारे को फैलाएं।

प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला विश्व **मिशन रविवार** हरेक ख्रीस्तीय में दूसरों के दु:ख तकलीफों को दूर करने व मानवीय विज्ञान से सम्बन्धित कार्यों (प्रोजेक्ट) के प्रति दिल खोल कर दान देने की आवश्यकता व जरूरत (गंभीरता) उत्तेजना (जागृति) उत्पन्न करता है। यही ख्रीस्तीय मिशन का केन्द्र है। इसके द्वारा हम अपने उन भाई-बहनों के प्रति भाईचारा और सहानुभूति जताते हैं जिन्हें इसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

मिशन रविवार के दिन हम अपनी विशेष प्रार्थनाओं के माध्यम से उन मिशनरियों के साथ जुड़ जाते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। हम सहयोग और करूणा की भावना से प्रेरित मिशनरियों को सहारा देने के विभिन्न रास्ते खोजते हैं, ताकि मानवीय सेवाओं द्वारा शुभ सन्देश निरन्तर जारी रखा जा सके।

मिशन, साक्षी और प्रेरिताई सब एक साथ चलते हैं और विश्व भर में फैली कलीसिया के एक भाग कार्य व कारण को समर्थन करते हैं। इसे **यूनिवर्सल सालिडॉरिटी फण्ड** के नाम से जाना जाता है। इसे **पाण्टीफिक्कल मिशनरी आर्गनाइजेशन (पी एम ओ)** के नाम से जाना जाता है। यह होली चाइल्डहुड सोसायटी, सोसायटी ऑफ प्रोपेगशन ऑफ फेथ और सेंट पीटर्स व सेंट पॉल्स सोसाइटी से मिलकर बनता है।

होली चाइल्डहुड सोसायटी बच्चों को अन्य बच्चों तक पहुंचने, उन तक शुभ सन्देश पहुंचाने के प्रति समर्पित है, वही **सोसायटी ऑफ प्रोपेगेशन ऑफ फेथ मिशनरी** महत्व पर ध्यान देती है। यह पुरुष और स्त्री मिशनरी और धर्म शिक्षकों द्वारा सिखाई गई शिक्षा और सेवा को महत्व देती है। यह फॉरमेशन हाउसिस (धर्मसंघी शिक्षा केन्द्रों) और गुरुकुलों में पहुंचती (सिखाई) जाती है।

मिशन रविवार का चन्दा निर्धन क्षेत्रों, धर्मप्रान्तों और संस्थानों को भेज दिया जाता है। आगरा महामर्धप्रांत भी इसी प्रकार की वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाली एक संस्था है। मिशन रविवार का चन्दा **यूनिवर्सल मिशनरी फण्ड** का एक हिस्सा है। लोगों की वक्ती तौर पर मदद करना मिशन का एक अभिन्न भाग है। संत पिता फ्रांसिस कहते हैं, कि 'मानवता की सेवा करने के लिए कलीसिया का यह मिशनरी कार्य सबसे बड़ा कार्य है। इसके द्वारा उन सब लोगों की जो जीवन का अर्थ ढूढने और उसे पूर्णता के साथ जीने की खोज करते हैं, मिशनरी समिति मदद करती है।' अत: मिशन का ख्रीस्त और ख्रीस्त ईश्वर के मिशन है। वह ईश्वर मानवता और विश्व से प्रेम करते हैं और उसे बचाते हैं।

मिशन रविवार का चन्दा और उदारतापूर्वक दिया हुआ दान एवं चन्दा जो हम मिशन के लिए देते हैं, कलीसिया के कार्यों को संभालने के बहुत काम आता है।

डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा
(आगरा के महाधर्माध्यक्ष)

विश्व मिशन दिवस 2017 पर संत पिता का संदेश

संघर्ष पर विजय पाना है

"ख्रीस्तीय विश्वास का आधार/केन्द्र मिशन है।" यह मुख्य विषय है इस वर्ष संत पिता फ्रांसिस के विश्व मिशन दिवस का। इस वर्ष यह दिवस रविवार 22 अक्टूबर को मनाया जायेगा। यहां संत पिता के संदेश का हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है।

प्रिय भाइयों और बहनों, एक बार पुन: विश्व मिशन दिवस हमें येसु के व्यक्तित्व के नजदीक एकत्र करता है। वह सबसे पहले और महान प्रचारक है। वह आज भी पवित्र आत्मा में होकर पिता के प्रेम का सुसमाचार हम तक भेजते रहते हैं। यह दिन हमें "**ख्रीस्तीय विश्वास के केन्द्र: मिशन**" पर मनन करने के लिए आमंत्रित करता है। कलीसिया (चर्च) वास्तव में मिशनरी है, अन्यथा वह ख्रीस्त की कलीसिया नहीं हो सकती किन्तु वह अन्य समूहों की तरह एक समूह है, जो शीघ्र ही सबकी सेवा करते हुए समाप्त हो जाऐगा। उसका महत्व और उद्देश्य भी समाप्त हो जाते हैं। अत: यह अति आवश्यक है कि हम अपने आपसे यह पूछें कि हमारे मिशन का आधार क्या है? उसका केन्द्र क्या है? अपना मिशन पूरा करने के लिए हमें किन-किन आवश्यक बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

मिशन और ख्रीस्त के सुसमाचार की परिवर्तनकारी शक्ति:

1. ख्रीस्त का मिशन सभी स्त्री-पुरुषों के लिए है। इसका आधार है ख्रीस्त की परिवर्तनकारी शक्ति। सुसमाचार हमें जीवन प्रदान करता है - पुर्नजीवित ख्रीस्त का जीवन, जो मार्ग, सत्य और जीवन है (योहन 14:6) वह मार्ग है।, हम सत्य का अनुभव करते हैं और जीवन पाते हैं। वह भी हमें हर प्रकार के स्वार्थ से मुक्त करता है। वह प्रेम में सृजनात्मकता/मौलिकता का आधार है।

2. पिता ईश्वर अपने पुत्र-पुत्रियों में अस्तित्वात्मक परिवर्तन चाहता है। ऐसा परिवर्तन जो आत्मा और सत्य में परिलक्षित होता है, आत्मा की प्रेरणा से पिता ईश्वर की महिमा उसके पुत्र येसु के अनुकरण में प्रकट होता है। ईश्वर की महिमा इसी में है कि मनुष्य जीवित है या यूँ कहा जाए कि जीवित मनुष्य ईश्वर की महिमा है। अत: सुसमाचार का प्रसार करना अनिवार्य है, जो अपने आप में पूर्णता प्राप्त करता है (इसा 55:10-11)।

मिशन और ख्रीस्त का कैसरोस

3. चर्च का मिशन किसी तरह की धार्मिक विचारधारा फैलाना नहीं है या कोई उच्च मानवीय शिक्षा प्रस्तुत करना नहीं है। विश्व में बहुत से ऐसे आन्दोलन हुए हैं, जिन्होंने अपने उच्च आदर्शों एवं प्रयासों से अर्थपूर्ण जीवन जीने की शिक्षा दी है। कलीसिया के मिशन द्वारा येसु ख्रीस्त स्वयं प्रचार करते और क्रियाशील रहते हैं, अत: कलीसिया का मिशन वर्तमान इतिहास में मुक्ति का उचित समय **कैसरोस** प्रस्तुत करता है। सुसमाचार की घोषणा से पुनजीर्वित प्रभु येसु हमारे समकक्ष (समकालीन) बन जाते हैं। जो लोग विश्वास और प्रेम के साथ उसका स्वागत करते हैं, वे उसकी आत्मा की परिवर्तनकारी शक्ति को अनुभव करते हैं। "जहां सब कुछ निष्प्राण प्रतीत होता है, वहां अचानक पुर्नरुत्थान अंकुरित होने लगता है। उसे दबाया नहीं जा सकता।" (ई. जी. 276)

4. हम यह नहीं भूलें कि ख्रीस्तीय होना किसी उच्च मानवीय चुनाव का परिणाम है, बल्कि यह एक घटना, एक व्यक्ति, जो हमारे जीवन को नया आभास और एक निश्चित दिशा देता है, के साथ हमारी व्यक्तिगत भेंट या मुलाकात है। प्रभु का सुसमाचार एक व्यक्ति के समान है जो निरन्तर हमें अपने को देता है और उन्हें आमंत्रित करता है, जो विनम्रता और धार्मिक विश्वास के साथ उसका स्वागत करता है। इस प्रकार वह व्यक्ति प्रभु के पास्का रहस्य में प्रभावशाली रूप से भाग लेता है। बपतिस्मा द्वारा सुसमाचार नवजीवन का

स्रोत बन जाता है। वह व्यक्ति पाप की दासता से मुक्त होकर आत्मा द्वारा परिवर्तित हो जाता है। दृढ़ीकरण संस्कार द्वारा वह आमंत्रित होकर उसी आत्मा से प्रभावित होकर नए मार्ग की साक्षी देता है। पवित्र मिस्सा द्वारा वह नवजीवन के लिए भोजन और अनन्त की औषधि बन जाता है।

5. संसार येसु ख्रीस्त का सुसमाचार निश्चित/आवश्यक रूप से चाहता है। कलीसिया द्वारा ख्रीस्त अपना मिशन निरन्तर जारी रखता है। वह भले गड़ेरिए के समान मानवता के खूनी घावों को भरता है। भटकी भेड़ों को निरन्तर ढूँढना और उन्हें अनिश्चितता और घुमावदार मोड़ों से ढूँढकर निकालता है। मैं सोचता हूँ कि किस प्रकार दिनका के छात्र ने भी अपनी जान की परवाह न करते हुए न्यूएर जाति से एक छात्र को बचाया। वह मारा जाने वाला ही था। मैं उत्तरी युगाण्डा के किंगडम के पवित्र मिस्सा के बारे में सोचता हूँ, जहाँ एक विरोधी दल द्वारा किए गए नरसंहार के बाद एक मिशनरी ने वहाँ के लोगों से बार-बार यह कहलवाया; **''मेरे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तूने मुझे क्यों बिसार दिया?''** यह निराश-हताश भाई-बहनों की क्रूसित प्रभु से करुण पुकार है। पवित्र यूखरिस्त समारोह वहाँ के लोगों के लिए सांत्वना और साहस का प्रबल आधार था। इससे उन्हें कुछ सहारा मिला। हम इसी प्रकार की असंख्य साक्षियों के बारे में जानते हैं, जहाँ लोगों ने अपनी संकीर्णता, संघर्ष, जातिवाद, कबीलावाद को त्यागकर आपस में और सब जगह प्रेम-भाईचारा, प्रायश्चित और मेलजोल को बढ़ावा दिया है।

मिशन निरन्तर निर्गमन, तीर्थ यात्रा और निर्गमन की आध्यात्मिकता को प्रेरित करता है।

6. कलीसिया के मिशन कार्य को निरन्तर निर्गमन की आध्यात्मिकता/धार्मिकता से बल मिला है। हमारे सामने चुनौती है कि हम अपने ऐशो आराम (सुख सुविधाओं) को त्यागकर उन लोगों तक पहुँचें, जिन्हें सुसमाचार की ज्योति की नितान्त आवश्यकता है। (ई.जी. 20) कलीसिया का मिशन हमें प्रेरित करता है कि हम जवीन के विभिन्न रेगिस्तानों से निकलकर / उस पार की तीर्थयात्रा पर जाएं, सत्य और न्याय की भूख और प्यास के विभिन्न अनुभवों को महसूस करें। हम निरन्तर निर्गमन की भावना से प्रेरित होकर, अनन्त के लिए प्यासे हों। हम अपने अनन्त निवास की ओर यात्रा करें, जहाँ स्वर्ग का राज्य विद्यमान है। कुछ लोगों को यह राज्य प्राप्त हो चुका है, कुछ की खोज अभी जारी है।

7. कलीसिया का मिशन हमें याद दिलाता है कि कलीसिया अपने आप में अन्त नहीं है, किन्तु एक विनम्र साधन मात्र है और राज्य प्राप्ति के लिए माध्यम है। अपने आप में पूर्ण/आधारित, सन्तुष्ट कलीसिया क्रूसित ख्रीस्त एवं पुनर्जीवित प्रभु की कलीसिया नहीं हो सकती। वह क्रूसित और महिमान्वित प्रभु का शरीर नहीं है। इसी कारण हमें उस कलीसिया को चुनना है, जो घायल है, पीड़ित, मैली और घृणित है, क्योंकि ऐसी कलीसिया सड़कों पर है, न कि ऐसी कलीसिया को चुनें, जो चारों ओर से बंद होने के कारण हानिकारक और अपनी ही सुरक्षा से चिपकी हुई है। (ई.जी. 49)

युवा वर्ग मिशन की आशा

8. युवा वर्ग/पीढ़ी कलीसिया के मिशन की आशा है। येसु ख्रीस्त का व्यक्तित्व और उसके द्वारा प्रचारित/प्रसारित शुभ सन्देश (सुसमाचार) बहुत से युवाओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। वे साहस और उत्साह के साथ मानवता की सेवा करने के माध्यम (तरीके) खोजते हैं।

बहुत से युवा अपनी एकात्मकता (अकेलेपन या युवावस्था) को विश्व की बुराइयों को दूर करने हेतु स्वयं को विभिन्न प्रकार के प्रयतमान और स्वयंसेवी कामों में लगा देते हैं हमें यह देखकर कितना अच्छा लगता है कि ऐसे युवा लोग **''सड़कों पर प्रचार करते हैं''** और पृथ्वी के हर कोने, हर शहर और हर गली में आनन्दपूर्वक प्रभु येसु का प्रचार करते हैं और उसे साकार करते हैं। (ई.जी. 106) वर्ष 2018 में धर्माचार्यों की आम सभा का विषय **''युवा पीढ़ी विश्वास और बुलाहट को पहचानने वाले।''** सौभाग्य से यह विषय युवाओं को कलीसिया की मिश्रित जिम्मेदारी में भागी बनने के लिए आमंत्रित करता है। इसमें युवा पीढ़ी की कल्पना शक्ति और रचनात्मकता की प्रबल आवश्यकता है।

शेषांश पेज 11 पर...

OBITUARY

Fr. Anthony Perunneparampil, TOR (1952-2017)

Fr. Anthony Perunneparampil was born on 1 September 1952 as the son of late Mr. Joseph and late Mrs. Thresiamma Perunneparampil of Erumely in the Diocese of Kanjirapally, Kerala. His siblings are: Thomas (Kerala), Joseph (Kerala), Mariakutty (Germany), Aleykutty (Italy), Fr. James, SDB (USA), Mathew (Germany), Fr. Jose, SDB (Guwahati), John (Kerala) and Dominic (Mysore). After attending primary school at Erumely, Anthony joined Sacred Heart Apostolic School, Changanacherry, and completed his high School studies at St. Berchmans' High School, close-by. Thereafter, with great zeal to spend his life as a Franciscan missionary, young Anthony, who was a nephew of the late Very Rev. Fr. Anthony Ramanattu, TOR, joined the Order as a candidate in 1969. Entering the Sacred Heart Novitiate at Bhagalpur on 19 June, 1971, Br. Anthony made his First Profession on 20 June, 1972. After Profession, he was sent to Franciscan Training Institute, Ranchi, for studies at St. Xavier's College where he graduated with a BSc degree in 1976. Thereupon, he joined St. Albert's College, Ranchi, for a two year program of Philosophy. Br. Anthony made his Solemn Profession in the Seraphic Order on 31 May, 1977. Then, he had his program of regency at Hasimara Mission in West Bengal. Returning to Ranchi, he joined St. Albert's College for Theology. Br. Anthony was ordained a deacon in June 1982. The Sacerdotal Ordination of Deacon Anthony was officiated at St. Francis Church, Gokhla, on 16 December, 1982 by Most Rev. Urban McGarry, TOR, Bishop of Bhagalpur, assisted by Very Rev. Fr. Aloysius Kattady, TOR, Minister Provincial. Fr. Anthony celebrated his First Solemn Eucharist of Thanksgiving at Our Lady of Perpetual Help Church, Poreyahat, on the following day and after a few days at his home parish in Kerala.

The first assignment of Fr. Anthony was as Assistant at Dorma Parish in the Archdiocese of Ranchi. In January 1984, he took up the assignment as Vice Principal of St. Francis School, Deoghar. During the long 35 years of his ministry, Fr. Anthony served the Order with great dedication in several areas such as education, pastoral ministry, formation and financial administration. He served the Archdioceses of Ranchi, Agra and Changanacherry and the Dioceses of Bhagalpur, Dumka, Jalpaiguri, Darjeeling, Simdega and Meerut. The institutions and parishes which had the benefit of his valuable service are located at Dorma, Deoghar, Poreyahat, Jamtara, Bhagalpur, Hasimara, Mathura, Bhukumunda, Trivandrum, Shamli, Noida, Khora, Baraut and Milak-Khanam. Simple, sociable and joyful as a Franciscan, Fr. Anthony cared for others more than for himself all through his priestly life. He was exemplary and fully dedicated to his prayer life, available to the needs of the fraternity and fully committed to

the mission of evangelization even in the most difficult areas. Fr. Anthony was always close to the people he served, especially in his zealous pastoral ministry, and they have a special place for him in their hearts. Many young friars who had Fr. Anthony as their Rector at the Minor Seminary in Gokhla remember him as an affectionate guide and father. The Silver Jubilee of the Priestly Ordination of Fr. Anthony Perunneparampil was celebrated with due solemnity during the Province Day gathering held at Franciscan Ashram, Bhagalpur, on 28 July, 2007.

Fr. Anthony served for a few years at St. Anthony's School and Parish in Khora as Vice Principal and Parish Priest with residence at Shanti Niwas Friary, Noida. In December 2016, he was transferred to St. Francis School, Baraut, as Vice Principal, Treasurer of the Friary and for Pastoral Ministry. However, when at the request of Most Rev. Francis Kallist, Bishop of Meerut, the Order took up the task of establishing a new parish in Pajawa Sub-station of St. Mary's Parish at Milak-Khanam in Bilaspur under the District of Rampur, Fr. Anthony was assigned to this new venture. Thus, Fr. Anthony was installed in his new mission by Very Rev. Fr. John Kochuchira, TOR, Minister Provincial, on 30 May, 2017. During the short period of over three months, while staying at Milak-Khanam, Fr. Anthony worked very hard to get the new mission organized with the help of Fr. Shinoj Kizhakemuriyil, Regional Minister and Fr. Jose Thottunkal, Regional Treasurer.

The call of the Lord came too soon on 15 September, 2017, the Feast of Our Lady of Sorrows who sent "Sister Death" to accompany her beloved son Anthony to heaven to reward him for his dedication in establishing God's Kingdom. Fr. Anthony got up in the morning and had his coffee as usual. As he was not feeling well, Fr. Martin Rawat, Parish Priest, celebrated the Mass. When Mass was over, Fr. Anthony told him that he had severe pain in his hands and legs. Then Fr. Martin went and brought a doctor. At the doctor's suggestion, Fr. Anthony was taken to a hospital in Bilaspur. As they reached the hospital, Fr. Anthony suffered a massive heart attack and left for his eternal reward at about 9:00 AM. The Friars in the Region were informed by Bishop Kallist that the body would be brought to Meerut and therefore, Frs. Shinoj Kizhakemuriyil, Jose Thottunkal and Abraham Koladiyil rushed to Meerut. In the afternoon, the body of the deceased Priest was brought by Fr. Martin and the Sisters to the parlour of FSLG Generalate in Meerut where Bishop Kallist prayed the Office for the Dead and blessed the body. Thereafter, the body of Fr. Anthony was taken to St. Mary's Parish at Mayur Vihar, Phase III, where the parishioners of Khoda and Mayur Vihar paid their respects to him and prayed for him. We are ever greatful to Bishop Kallist and Fr. Martin Rawat for their loving concern and timely support to Fr. Anthony. After embalming at Delhi, the body was taken to Patna by flight on 16 September, accompanied by Frs. Shinoj, Jose and Abraham, and reached Bhagalpur at 6:00 p.m. by road. On Sunday, 17 September, several priests, religious, parishioners and friends paid their respects to Fr. Anthony who was a former teacher of Mt. Assisi School, and prayed for his eternal repose.

Fr. Anthony Perunneparampil's funeral held at St. Francis Church, Gokhla, on 18 September, 2017, at 10:00 a.m. was officiated by Most Rev. KurienValiakandathil, Bishop of Bhagalpur, assisted by Very Rev. Fr. Jose Thekkel, Vicar Provincial, Most Rev. Peter Goveas, Bishop -

Elect of Bettiah, Very Rev. Fr. N.M. Thomas, Vicar General, Fr. Jose Chackalakal and Fr. James, SDB and Fr. Jose, SDB, brothers of Fr. Anthony. 50 Friars and Priests concelebrated. Fr. Marianus Hansdak, TOR, served as the Commentator. A touching homily was delivered by Fr. Jose Chackalakal, who had studied with Fr. Anthony from their school days at Changanacherry. The Church was full to capacity with Priests, 100 Religious, 20 members of the family including six brothers and two sisters, boys and girls of the schools, and friends. The devotional music was rendered by the choir of CTC Sisters. At the end of the Mass, condolence messages were given by Most Rev. Kurien Valiakandathil and Most Rev. Julius Marandi, Bishop of Dumka. This was followed by a few words of appreciation and gratitude by Fr. James Perunnerparmpil, SDB, representing the family. The Vote of Thanks was given by Fr. Jose Thekkel who thanked one and all present especially Bishop Kurien, Bishop Julius, Bishop-Elect Peter Goveas, Fr. N.M Thomas, Vicar General, the Family Members, Priests and Religious of Bhagalpur and Dumka, and all who had made it possible to give a fitting farewell to dear Fr. Anthony. Thereafter, the body of the deceased Franciscan Missionary was blessed by Bishop Julius. At the cemetery, the grave was blessed by Bishop Kurien and the final prayers were offered by him and Fr. Jose Thekkel.

In the sad demise of Fr. Anthony Perunneparampil, the Order has lost an authentic Franciscan, the Church has lost a truly dedicated missionary who loved the people and offered his life for them. Fr. Anthony has taught us not only how to love God and establish his kingdom through self-less service, but also how to die in the hands of Mary, the Mother of God, without troubling others. May the exemplary life and apostolic dynamism of Fr. Anthony Perunneparampil ever inspire us. May God grant him the reward of eternal blessedness.

Courtesy Fr. Shinoj K., Khera Khurd

...पृष्ठ 8 का शेष

पोण्टीफिकल मिशन समितियों की सेवा

9. पोण्टीफिकल मिशन समितियाँ सुसमाचार प्रचार प्रसार की पवित्र माध्यम हैं, जो प्रत्येक ख्रीस्तीय समुदाय में सुसामचार की जागृति पैदा करती है। हम मिशनरी आध्यात्मिकता के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं, जो प्रतिदिन पोषित की जाती है और युवाओं, वयस्कों, परिवारों, पुरोहितों, धर्माध्यक्षों और धर्मसंघी स्त्री-पुरुषों के हृदयों में मिशनरी जागृति पैदा करती है। **विश्व मिशन दिवस** एक सुयोग्य अवसर है, जो ख्रीस्तीय समुदायों के हृदयों को योग्य बनाता है, कि वे प्रार्थना जीवन और सहभागिता की साक्षियों के द्वारा प्रचार प्रसार की बढ़ती आवश्यकता का जवाब दे सके।

प्रेरिताई की जननी, मरिया के साथ अपना मिशनरी दायित्व पूरा करना

10. प्रिय भाइयो-बहनों, अपना मिशनरी दायित्व पूरा करने के लिए हम प्रेरिताई की जननी, माता मरियम से प्रेरणा प्राप्त करें। आत्मा से संचालित होकर उसने जीवन के शब्द को विनम्र विश्वास के साथ अपने तन मन की गहराई तक ग्रहण किया। वही कुँवारी माँ वर्तमान समय की आवश्यकता को ध्यान में रखकर हमें भी जागरुकता के साथ "हाँ" कहने में मदद करे। हम में नवीन उत्तेजना दिलाए, कि हम मृत्युंजयी जीवन का शुभ सन्देश हरेक प्राणी तक पहुँचा सकें। वह हमारे लिए प्रार्थना करे कि हम प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए आवश्यक साहस प्राप्त कर सकें, जो उनकी मुक्ति के लिए आवश्यक है।

वाटिकन से 4 जून 2017
पेन्तेकोस्त का महापर्व
फ्रांसिस (संत पिता)

Mary,
The Mother of All Graces

Is Mary a Mediatrix?

The term "mediatrix" means a female mediator. Before addressing this title, let it be confirmed at the outset that Mary's mediation does not violate the words of Saint Paul regarding the mediating priesthood of Jesus Christ, when he writes: "For there is one God: and one mediator of God and men, the man Christ Jesus" (1 Tim 2:5)

Christ is the one mediator between God and men because He is both fully God and fully human. Since He offered Himself as a perfect sacrifice to God, He alone can redeem mankind from sin.

However, Saint Luke records that the Holy Simeon prophesied to Mary that she too would suffer with Her divine Son:"so that the inner thoughts of Mary will be revealed-and a sword will pierce your own soul too" (Luke 2:35).

The Fathers of the Church identify the "piercing sword" in Mary's soul as the moment when Mary beheld her dying Son on the cross, even more, when she held his cold, lifeless body in her arms.

Her quiet and maternal presence with Christ's high priestly sacrifice envelops her into the sacrifice of Christ in a unique way. Consider this, the Son of God acquired His flesh and blood from her flesh and blood. Jesus could die for us, because she gave to Him a body.

Jesus and Mary at the cross are the redemptive Adam and Eve. Eve once looked up to a tree in order to seize its fruit unlawfully. Now, Mary as the New Eve, beholds the tree on which hangs the "Fruit of her womb." She does not claim rights over this Fruit, but willingly offers It to the Father. The New Adam hangs suspended on the wood for every sinner. The New Eve stands by in sorrow.

Mary's mediation is based on her intimate union and consent to the Passion and Death of Christ. Moreover, we find in Scripture that Jesus comes to the world through Mary, literally. St Elizabeth and her baby. St. John the Baptist are filled with the Holy Spirit when St. Elizabeth hears the voice of Mary. Jesus works His first miracle at Cana at Mary's request. Furthermore, Mary is present at Pentecost when the Holy Spirit is poured out upon the Apostles. Just as Mary's voice was the instrument that carried grace to Saint Elizabeth, so Mary is the personal instrument by which grace flows to us from Christ. St Bernard of Clairvaux called her the "aqueduct (channel) of grace."

What about the Scripture?

We do know that the sanctification and confirmation in grace of Saint John the Baptist while still in his mother's womb occurred through the mediation of Mary's audible voice. "For behold as soon as the voice of thy salutation sounded in my ears, the infant in my womb leaped for joy. " (Luke 1:44, D-R)

(Sirach 24:24-25) "I am the mother of fair love, and of fear, and of knowledge, and of holy hope. In me is all grace of the way and of the

truth, in me is all hope of life and of virtue". Mary is the "Mother of Fair Love" and "in [her] is all grace." Here then is an Old Testament prophecy of Mary's title as Mediatrix of All Graces.

As discussed above, Our Lady's presence at the Lord's Conception, Nativity, Life, Death, Ascension, and then Pentecost reveal her mediating office under Christ.

Does Mary mediate Sacramental Grace?

As for sacramental grace, Saint Cyril of Alexandria, when addressing the Fathers of the Council of Ephesus (AD 431) stated that the grace of Baptism, Confirmation, and Holy Orders flow through Mary to the Church.

Just think about the seven sacraments and you'll agree with me:

1. Baptism removes the stain of Eve/ Original sin (Mary is the New Eve). It gives us the Holy Spirit (the Spouse of Mary), and unites us to the death and resurrection of Christ (Mary mediates under the cross).

2. Confirmation is the sacrament that confers the grace of Pentecost to each one of us. Mary is the Spouse of the Holy Spirit and she was present at the Pentecost.

3. Holy Eucharist is the Body and Blood of Christ. This flesh and blood of the Eternal Logos were derived from the womb of the Blessed Virgin Mary. No human Mother? No Body and Blood.

4. Penance/ Confession is the application of Christ's merit and blood to the sinner. Mary's mediating presence under the Cross confirms her role in this sacrament.

5. Extreme Unction/ Sacrament of the sick is the sacrament that prepares the believer for death. Christ gave Mary dominion over the "hour of death" and over Purgatory by her desire to die a human death, even though she remained without sin. She desired to die in order to be conformed more perfectly to Christ. This is also foretold in Ecclesiasticus 24:45, "I will penetrate to all the lower parts of the earth, and will behold all that sleep, and will enlighten all that hope in the Lord".

6. Holy Orders is the mystery of the priesthood, and Christ became the High Priest of Humanity by virtue of His Incarnation. However, Mary was absolutely necessary for His assumption of the human nature. No Mother? No Incarnation? Again, Mary's presence at the Cross also affirms her role here, since Christ manifestly exercised His priesthood on the Cross.

7. Holy Matrimony was raised to the dignity of a sacrament at the Wedding of Cana. Christ's miracle and blessing at the Wedding of Cana occurred through the direct mediation of Mary. Thus, she too is the mediatrix of the sacramental grace of Holy Matrimony.

So then, it's easy to see that Scripture links Mary to all seven of the sacraments. While some oppose the position that Mary is the mediatrix of sacramental grace, I see every reason to affirm that she is the mediatrix of sacramental grace.

The Second Vatican Council (Lumen gentium, 61-62), says:

... in suffering with Him as He died on the cross, she cooperated in the work of the Savior, in an altogether singular way, by obedience, faith, hope, and burning love, to restore supernatural life to souls. As a result she is our Mother in the order of grace.

In the words of St. Bernardine of Siena: 'Every grace that is communicated to this world has a threefold course. For by excellent order, it is dispensed from God to Christ, from Christ to the Virgin, from the Virgin to us."'

According to Pope Pius XI, "we know also that all things are imparted to us from God the

Contd. on page 15

Dogs will not enter the Kingdom of Heaven (cf. Rev 22:15)

On the night of 3rd September, I was finding difficult to sleep. There was something that did not allow me to sleep. Immediately a thought flashed through my mind - "Dog is the Devil in disguise:' For a moment, the thought became frightening and horrifying reality. I got off my bed around 1:00 a.m. and started to pen down my thoughts.

From my childhood, I was afraid of dogs. I never dare go near to them until I knew that they are harmless. Once a puppy bit my sister; one of my closest friends was bitten by a dog in the seminary. From that time onwards, he too never dared to go near the dogs and used to run away from them. Once I was also bitten by a wayward dog and was under medication. Whenever I paid a visit to the people, I had to face this animal first and foremost and then only I was allowed entry into the houses. These are some of my bad experiences with the dogs.

Quoting Rev. 22:15, A parishioner asked me once, "Father, it is written that outside of the kingdom are the dogs and sorcerers. Why is it written like that?" I replied to her that the people who behave like dogs will be outside the kingdom of God. I quoted Mt. 15:26, saying -that Jesus called the Gentiles dogs, not all Gentiles. She was satisfied with the answer, I was not. From that time onwards my encounter began with the dogs more closely. I observed that many a people are fond of dogs. They bring them up as pets. It has become a fashion, I would say. But the reality I encountered was something different. They are well fed, and well treated. Even the home people would not get such treatment. Some dogs eat only meat and drink milk. They are totally non-vegetarian. One of our parishioners told me that her dog will go hungry if it is not given meat and milk (Bhookh Fladtal!). Out of sympathy she feeds her pet with only meat and milk. They enter people's bedroom, and play with the emotions and feelings of the people. Thousands of rupees are spent on them for their up-keep and why not, even lakhs for food and medication. Some people are addicted to their dogs and without them they cannot exist, eat and sleep. Thus this animal takes advantage of human feelings and sympathies. Seeing all these tamaashaas, people are led to say that if there is another birth on earth, they would ask God to make them domestic dogs!!! A heavenly, luxurious life indeed!!!

On the other hand, the dogs are enjoying which belongs, by right, to the human beings. People outside have nothing to eat and drink; finding hard to meet both the ends. How can a man feed the dogs well, when his children are starving? The man with plenty (the rich) could do that. I am reminded of Ps. 49:12 which says, "In his riches, man lacks wisdom; he is like the

beasts (dogs) that are destroyed."How true it is that the rich do not know how to make use of their riches! Again it is said in the Parable of the Prodigal Son, "He (the Prodigal Son) would gladly have filled himself with the pods that the pigs were eating; and no one gave him anything" (Lk. 15:16). Our Lord Jesus said to the Syrophoenician (Canaanite) woman, "Let the children be fed first, for it is not fair to take the children's food and throw it to the dogs" (Mk. 7:27). The Lord is saying to us feed the children who are hungry and thirsty first. The reply of the woman is amazing and striking the chord: "Sir, even the dogs under the table eat the children's crumbs" (Mk. 7:28). Yes, the dogs supposed to eat what is left over; what falls from the children's table. But the reality we encounter is otherwise. The prodigal son was feeding himself with the pods that the pigs were eating; and no one gave him anything. An inhuman and indifferent attitude toward our needy brethren!

We have closed our eyes to see the reality and continue feeding our dogs and have ignored our own people in need. The dogs will not enter the kingdom of heaven; our needy brethren will. The people, who declare in public, T will do or I will give' for the charitable purposes, have turned their back and shown their long faces (charity has been swallowed/ is withdrawn). Is it not like the dog's behavior: it vomits what has been eaten and then eats what it had vomited? If this is the case, I have a big question to put forward: Are these dogs a devil in disguise (just like cows, monkeys and other animals and birds in the pagan religions) to take away our human feelings toward our fellow, needy brethren and thus to violate the second greatest commandment of the Lord: 'Love your neighbor as yourself?'

Some people might argue that dogs are kept for safety' sake. The Bible says not to put our trust in horses (even dogs) and princes, but trust in the Lord. The Lord protects, not the dogs. Let us put our trust in the Lord and care for the brethren in need. Otherwise the dogs would become devils incarnate in our homes and in our lives to cast us into the fires of hell.

Fr. Xavier
St. Patrick's Church, Agra Cantt.

Contd. from page 13

Greatest and Best, through the hands of the Mother of God".

Pope Leo XIII says: "may He hear the prayers of those who beseech through her, whom He Himself willed to be the mediatrix of graces".

It is also true that St John Paul II, who lived in our time, repeatedly referred to the Mother of Jesus as the "Mediatrix of all graces" and has prolifically taught the doctrine of Our Lady's "Maternal Mediation" throughout his extraordinary Marian Pontificate.

Pope Benedict XIV says Mary is like "a celestial stream through which the flow of all graces and gifts reach [us]".

For Pope Pius IX, "For God has committed to Mary the treasury of all good things, in order that everyone may know that through her are obtained every hope, every grace, and all salvation."

As a conclusion, we can categorically state that our Marian Devotion is scripture based and subsequently upheld and defended by the Popes, the Saints and the Fathers and of the Holy Catholic Church. Let nothing disturb and discourage us!

Fr. Vineesh Joseph
Courtesy: Internet Sources

MILAWAT

What is it? How does it work? Why is it happening? There are many more questions keep ringing in our ears and indeed some of us are in a state of puzzle, trying to find out the cause for it. The meaning of the Hindi word "Milawat", is adulteration, impurity, inter mixture, interfusion etc. We take an example of milk which we purchase for our daily consumption from the milk man. In spite of paying him the best price assuming pure milk, one is trapped with the 'milawat' of water in it. Today, Milawat has spread its wings in every sphere of life and eating the human being like the earth worm not been able to diagnose until a person has turned a victim of it.

There is nothing left in this globe without the "milawat". From the very beginning of the creation we see it working. God saw all that He made and indeed it was very good(Gen 1,31). But when God created human beings and gave them command over the creatures the story takes a different turn. The great fall of Adam and Eve reflects milawat of greed, attachment, betrayal, denial and deceit. Instead of owning the responsibility, they tried to play the diplomacy and passing the buck to one another. God had to pass the judgment against all the three;Satan, Adam and Eve. (Gen 3,14-24) The story of Cain and Abel illustrates the 'milawat' of jealousy, anger, selfishness and power which over takes the blood relationship between two brothers, causing enmity resulting in cold blooded murder(Gen 4,8). Sammuel anointed David, a young shepherd lad to reign over Israel. He was so courageous that it didn't take much time to bring down the Philistine head, a stone was slung at him and struck the forehead of Goliath (1 Sam 17, 49). The man chosen for a noble cause on account of 'milawat' commits sin against Bathsheba (2 sam11,17), gets Uria killed(2 Sam 11,17). Thereafter we see the intervention of God followed by repentance and transformation in David.

Why did Judas betray Jesus? It was precisely on account of the 'milawat' in his conduct and attitude, handed over Jesus to enemies for thirty silver coins. He wasn't sincere in his dealing and even at the last supper, knowing the fact that he was to cheat Jesus asked the question- you mean me, Master do you?"(Mt 26, 25)

Jesus invites us to be childlike in every aspect of our life. "Let the children come to me and do not hinder them, for the kingdom of heaven belongs to such as these" (Mt 19,14). What happens to these little children as they go further? Obviously they get into 'milawat' and factors like background, external environment, and peer group pressure, social media have an influence to such an extent that the childlike nature disappears and gradually wickedness creeps, in leaving the parents shattered.

Today we find the milawat everywhere. The rivers are affected. The rivers carrying fresh water at the commencement are gradually reduced to mere drainage with contaminated liquids. We have the best example of river Jamuna. One could hardly believe that it is a river or a ganda nala. The air we breathe is no longer fresh, but milawat of all kinds of pollutants. Lot many commodities today have a milawat sold in open markets. The heart breaking video clippings in social media reveal the dirty works of some countries

manufacturing commodities like rice, cabbage, fish etc from plastic. India has become a safe haven and dumping ground for them to sell out their goods, for the slow death of Indians.

Today political parties are, to a large extent affected by milawat. There is so much of contradiction in what they proclaim and act. Parties turn out to be circus companies where by elected representatives' change sides at the cost of those people who have elected them from their respective constituency. Tarnished image, losing credibility and with a opportunistic mind set the politicians have miserably failed to fulfill the mandate entrusted to them. The government policies are more likely be influenced by milawat of divisive agenda. The political process taking shape today is against every fundamental, humane and constitutional principal of equality and dignity of every Indian, preserving common good. We find milawat in press and media. Fake and false, manipulated and distorted news being telecasted, making the people believe what is not true. Milawat in love and relationships is inevitable today. Boys and girls get trapped into a nexus of love drama for extracting money, property, pleasure, wealth etc., leaving no room for genuine love. Hearts and minds are polluted and contaminated. Hence marriages are broken and divorces are on rise, the bond between the two no longer sustains the due to lust, greed and selfishness.

Are the religions also affected by Milawat? Certainly yes. Influence, power, money, position, nepotism, regionalism etc become serious concerns for milawat. Survival of the fittest theory is truly applicable where by the powerful and influential get rooted down and the rest struggle for the survival.

The milawat has led to the erosion of values in human beings. People learned to wear hypocrisy and duplicity to hide their iniquities. Hence, Jesus wrightly speaks about milawat in a person which occurs from evil ideas which lead him to do all kinds of immoral things (Mt.15,19). Jesus vehemently condemned the teachers of the law and Pharisees (Mt.23,13-28), called them hypocrites, blind guides, brood of vipers and white washed tombs because there was milawat in what they preached and practiced before the people. The time has come for a revolution leading to great transformation of heart and minds, as Pope Francis in all his exhortations emphasizes for a change, to lead a life of love, truth and holiness.

Fr. Alwyn Pinto
St. Theresa's Church, Kosikalan

DATES TO REMEMBER

OCTOBER

1	B.D.	FR. VARGHESE K.
5	B.D.	FR. PRAKASH D'SOUZA
7	B.D.	FR. TOMY V. A.
21	B.D.	FR. EUGENE M. LAZARUS
28	O.D	FR.PRAVEEN RAJ MORES
28	O.D	FR.SIJU PINDIKANAYIL
28	O.D	FR.TONY D'ALMEIDA
28	O.D	FR.JOSEPH KUMAR PASALA
28	O.D	FR.PRAVEEN D'COSTA
28	O.D	FR.P.RAJ
28	O.D	FR.PRAKASH RODRIGUES
28	O.D	FR.SANTEESH ANTONY
29	B.D.	FR. THOMAS K.C.

HOLY FATHER'S INTENTION
OCTOBER - 2017

Universal: Workers and the Unemployed. That all workers may receive respect and protection of their rights, and that the unemployed may receive the opportunity to contribute to the common good.

Meet Our New Priests...

Anthony Maria Jude Abraham:

My name is Anthony Maria Jude Abraham. I am called and known as Jude. My parents are Mr. Abraham and Mrs. Annamary. I am the last among the three children of my parents, having an elder sister and elder brother. I belong to the Holy Ghost Parish, Archdiocese of Bangalore. I completed my schooling from St. Alphonsus High School, Bengaluru in the year 2004.

My motto is : "What I am is God's gift to me; what I become is my gift to God".

My life is a gift from God. I was declared to be critical and almost dead in my mother's womb during the sixth month of her pregnancy, but I was miraculously saved through the prayers of my beloved parents, who interceded to St. Jude, the Patron Saint of Hopeless Cases. From my very childhood I have experienced the great love of God and often through my own parents and through various religious people, including my Parish Priest, Late Rev. Fr. Wilson, I was inspired and I had a great desire to be at the service of the Lord by becoming a good priest. I admired and still do admire priests: the men of God. As I completed my SSLC, I decided to join the Seminary. By the grace of God, I met Rev. Fr. Joseph Rodrigues, the then newly ordained priest of the Agra Archdiocese, who inspired me and promoted me to join the Archdiocese of Agra.

I was welcomed and accepted at tiR St. Lawrence of Brindisi Minor Seminary, Agra. I started the formation in the year 2004, under the able guidance of Rev. Fr. Joe Thykkattil (the then Rector), Rev. Fr. Jacob Palamattom (the Vice Rector) and all the staff there. I completed my Minor Seminary formation along with the Intermediate studies. I was promoted for a year of Spiritual Orientation (2007-2008), and then from 2008 to 2011 pursued my Philosophical studies along with B.A. from June 2011 to May 2012, at St. Francis Xavier Regional Seminary (MVP), Etmadpur, Agra.

I had a wonderful year of mission experience at Anup Nagar, under the guidance of Rev. Fr. Peter Parkhe. This year helped me to deepen my faith and especially strengthen my vocation. I am very grateful to my Archbishop, Most Rev. Dr. Albert D'Souza and Rev. Fr. Peter Parkhe for the guidance, love and care I received during my regency period. The following year, due to an injury and operation of my left knee, I had to be under medication and regular Physiotherapy and so that year, I did not go for my Theological studies. In 2012-2013,1 was in the Archdiocese, and during this time, I was gifted with a great privilege and was asked to be of some help to Rev. Fr. Rogimon Thomas, in looking after my younger brothers (7 Minor Seminary Brothers) who were pursuing their 11th and 12 at St. Paul's Inter College, Agra.

From 2013-2016, I was sent to St. Joseph's Regional Seminary, Allahabad, for my Theological studies. On August 7th, I received the precious blessing from God: I was ordained Deacon by Most Rev. Raphy Manjali, the Bishop of Allahabad.

After completing my Theological studies, I returned to the Archdiocese of Agra, and from December 2016, I was asked to render my services at St. Lawrence's Minor Seminary, St. Mary's Church, Pratappura, Agra, and St. Michael's Mission, Anupnagar.

I am very happy to be a part of our mission Diocese. I always pray to the Lord and Master who has called me to be His own from my mother's womb itself! I firmly believe, He does have a plan for me. May I always be ready to accept His will and fulfill all that is required of me by my loving Master. As a priest of God, I would always walk in the footsteps of my Lord and serve Him by serving His people.

I sincerely acknowledge the love and guidance of our beloved Archbishop, all the priests, religious and all the faithful of Agra Archdiocese. In a very special way I remember and thank St. John's Parish Community, Firozabad and the Holy Family Community of Bharatpur for supporting me with their valuable prayers throughout my formation.

I humbly request you all to remember and pray for me and my companion Rev. Deacon Louis Xess, that we may be fruitful in our ministry, as we are very close to the altar of the lord, we are greatly in need of your valuable prayers, we assure you of our prayers.

Louis Xess

I am Deacon Louis Xess, and love to be called in short, as Elui. My parents are Joseph and Mrs. Angela. We are 7 siblings in our family: I have four sisters and two brothers. I hail from Odisha. My native Parish is St. Anthony's Church, Bodmal (Rairakhol), belonging to the Diocese of Sambalpur.

I completed my pre-primary and primary education from my home Parish School, after which I was sent to an Apostolic School, where I stayed in the hostel and pursued my High School studies.

During these days, inspired by the Missionaries in my native place, I aspired to be like one of them. Once it so happened, when asked in the class about our future plans for our life, my answer was "I want to become a Priest". Since then I oriented all my aims and ambitions towards this very Call from God and never turned back. At the completion of my Intermediate in the year 2006,1 joined St. Lawrence Minor Seminary, Agra. There I was very warmly welcomed by Rev. Fr. Joe Thykkattil (the then Rector), and Rev. Fr. Roy Dolphus (the Vice Rector). After two years of Minor Seminary Formation, I was promoted to Masih Vidyapeeth, Regional Philosophate, Etmadpur, for my Spiritual Orientation and Philosophical studies.

I did my Regency under the guidance of Rev. Fr. Sunil Mathew in Fatima Church, Ajay Nagar Mission, Mathura.

From the year 2013-2016, I was sent to St. Joseph's Regional Seminary, Allahabad, for my Theological studies. At the completion of three years on August 7, 2016, I received the Sacred Order of Diaconate conferred by Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, Bishop of Allahabad. From last December, I am back in my Diocese and experiencing the missionary life in various places like Etah, Anup Nagar and Aligarh.

I am happy to be in the Archdiocese of Agra. I pray to Almighty Qod who has called me, to be at my side, and direct me the way He wants. As a priest, I pray to the Lord that I may be an instrument to win many souls for Him.

I humbly request you to keep me and my companion, Deacon Jude, in your valuable prayers, so that we may do the will of God. I request your special prayers on October 1, 2017, the day of our Priestly Ordination.

''हिन्दी से हिन्दुस्तान है, तभी तो ये देश की शान है, हिन्दी से हिन्दुस्तान है, तभी तो देश महान है।''

(इस भाषण/सम्बोधन को प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मिला है)

देश की प्रगति के गर्भ में राष्ट्रभाषा हिन्दी का विशेष महत्व है। जिस देश की अपनी कोई भाषा नहीं है वह राष्ट्र गूँगा व बहरा है। कई पड़ावों से गुजरकर हिन्दी भारतवासियों के दिल की धड़कन बनी, पर समय के साथ-साथ भाषा ने भी करवट ली और कार्यालयों में कार्यों का माध्यम विदेशी भाषा अंग्रेजी बन गयी। यह क्रम सदियों से चला आ रहा है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्पष्ट कहा है–

''निज भाषा उन्नत अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय की शूल।''

विश्व में करीब सभी देशों की अपनी भाषा है जो सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बाँधती है। हिन्दी पूर्ण रूप से सक्षम और समर्थ भाषा है। हमारे संविधान में हिन्दी को भारत की संग भाषा कहा गया है। अकेले भारत में सत्तर करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। आज विश्व में करीब 126 देशों में हिन्दी का अध्ययन और अध्यापन होना हिन्दी भाषा की लोकप्रियता और वैज्ञानिकता एवं चिन्तन का प्रमाण है। हिन्दी की शब्द संपदा करीब सात लाख शब्द की है। विश्वस्तर पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपना भाषण हिन्दी में दिया तो पूरा विश्व स्तब्ध रह गया। उस समय सम्पूर्ण विश्व में उनकी खूब प्रशंसा हुई थी।

प्रिय साथियों मैं अपनी बात को दृढ़ता से कहना चाहती हूँ और सिद्ध भी करना चाहती हूँ, कि हमारी हिन्दी भाषा में इतना दम है कि विदेशी छात्र भारत में हिन्दी और संस्कृत पढ़ने आते हैं। कोई भी विधा या विश्व नहीं है जिसकी अभिव्यक्ति हिन्दी में न की जा सके। हिन्दी सर्वाधिक प्रभावशाली समर्थ एवं समृद्ध भाषा है। इसलिए मैं अपनी भाषा और भारतवर्ष पर गर्व करती हूँ। हिन्दी स्नेह, सहयोग, सहानुभूति और संवेदना की भाषा है। इसके माध्यम से किसी भी बात को सहजता और सरलता से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

मैं गर्व से कह सकती हूँ कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमें त्रुटि न के बराबर है। अर्थात् हिन्दी जैसे लिखी जाती है वैसे ही बोली जाती है। कम्प्यूटर प्रसारण में भी हिन्दी का प्रयोग तेजी से हो रहा है। हिन्दी की माँग का अंदाज लगाइये कि दुनिया के सबसे बड़े सर्च इंजिन गूगल ने वर्ष 2009 में हिन्दी भाषा को अपना लिया।

अन्त मैं यही कहूँगी अभिमान है मुझे हिन्दी पर, मेरा देश हिन्दी भाषा के कारण ही महान है। जिस तरह तिरंगा हमारे देश की शान है वैसे ही हिन्दी हमारी धरोहर है। जब हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका में हिन्दी में भाषण दिया तब उन्होंने यह बात सिद्ध कर कि विदेशी धरती पर मातृभाषा में आत्मविश्वास से अपनी बात रखनेवाला ही सच्चा देशभक्त हो सकता है।

कृपा लूथरा, 5-सी
सेंट एंथनी जू. कॉलेज, आगरा

Bp. P.P. Habil Celebrated 4th Anniversary of his Episcopal Ordination

Agra 28 Sept. Rt. Rev. P.P. Habil (Bishop of Agra Diocese, CNI) celebrated 4th anniversary of his Episcopal Ordination. A special thanks giving service was organised on 28th Sept. at St. George's Cathedral, Agra. The Agra Diocese CNI consists of whole of Western U.P., Uttrakhand etc. Previously it was a part of the Diocese of Lucknow. There are 46 presbyters (Pastors) working in Agra Diocese.

Rev. Fr. Eugene Moon Lazarus Secretary Agra Clergy Fellowship participated in the ceremony and wish Bp. Habil on behalf of the Archbishop and the Archdiocese of Agra.

सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद में शिक्षक दिवस मनाया गया

5 सितम्बर। सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल फतेहाबाद में धूमधाम से शिक्षक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। विद्यालय के प्रबंधक फादर सेबास्टियन पंथलाडी तथा प्रधानाचार्य फादर डॉमिनक जॉर्ज ने सभी शिक्षकों को आशीर्वचन कहे।

आगरा शहर के इण्टर कॉलेजों में एच.आई. वी/एड्स पर जागरुकता कार्यक्रम

आगरा। फातिमा हॉस्पीटल, आगरा में चल रहे प्रोग्राम एच.सी.डी.पी. के अन्तर्गत आगरा शहर में दिनांक 4 व 6 सितम्बर को रोहता इण्टर कालेज और राम किशन इण्टर कॉलेज में जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन प्रोजेक्ट इंचार्ज सिस्टर डेज़ी फ्रांसिस के नेतृत्व में सोशल वर्क स्टाफ द्वारा ऐनीमेशन मूवी द्वारा समझाया गया और स्त्रोतकर्ता श्रीमती मोली जोस ने इस कार्यक्रम के माध्यम से लगभग 135 छात्र व छात्राओं को इस बीमारी के बारे में विस्तार से व महत्वपूर्ण जानकारी दी। छात्र व छात्राओं ने ध्यानपूर्वक उन्हें सुना व प्रश्न भी पूछे।

सेंट पैट्रिक्स चर्च में बालिका दिवस मनाया गया

8 सितम्बर, ''बालिका कुदरत की है उपहार, इसको जीने का दो अधिकार।'' इसी विचाराधारा को सार्थक करते हुए संत पैट्रिक्स पल्ली, आगरा कैण्ट में बालिका दिवस बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सितम्बर माह में कलीसिया माता मरियम का पवित्र जन्म दिवस मनाती है। भारत की काथलिक कलीयिसा 8 सितंबर को बालिका दिवस के रूप में मनाती है। संत पैट्रिक्स पल्लीवासियों ने इस दिवस को इतवार 17 सितम्बर को मनाया। दिन की शुरुआत आराधना व प्रार्थना से हुई। पवित्र मिस्सा बलिदान के रूप में पल्ली की सभी बालिकाएं भक्ति भावना के साथ दो पंक्तियों में वेदी तक आयीं और पुष्पार्पण किया। मिस्सा बलिदान में उन्हें सबसे सामने की बैंचों पर बैठाया गया। मिस्सा के हर भाग में उन्होंने बढ़चढ़कर भाग लिया। मिस्सा के अंत में सभी पल्लीवासियों को बेटियों के संदर्भ में एक ऑडियो क्लिप सुनाया गया। इसे सुन कुछ लोग भावुक हो उठे। विश्व भर में बालिकाओं के लिये विशेष प्रार्थनाएं हुईं।

तालियां बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। मिस्सा बलिदान में पल्ली पुरोहित फादर जॉन फरेरा, फादर डेनिस डिसूजा, फादर जेवियर ने भाग लिया।

मिस्सा के पश्चात बालिकाओं के लिये खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया व जलपान और उपहार भी प्रदान किये गये। नेतृत्व सिस्टर विक्टोरिया एलेक्स द्वारा किया गया। 17 सितम्बर संत पैट्रिक्स पल्ली की बालिकाओं व बेटियों के लिए उत्साह, भावनाओं व प्रेम से भरा दिन रहा। संत पैट्रिक्स पल्ली समस्त बालिकाओं के सपनों व क्षमताओं का दिल से सम्मान करती है। हम सब एकजुट होकर बालिकाओं के विरुद्ध हो रहे भेदभाव को दूर करें तथा उन्हें समानता का अवसर दिलाएं, क्योंकि – हे मानव, तेरी लालसा है बेकार, बिन बेटी के न चले संसार।

श्रीमती वेरोनिका फर्नांडीज
सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा

फातिमा हॉस्पीटल में नर्सिंग छात्राओं का शपथ ग्रहण समारोह

आगरा। फातिमा हॉस्पीटल में पिछले 6 वर्षों से समाज की निर्धन वर्ग की लड़कियों व महिलाओं को नर्सिंग प्रशिक्षण कोर्स द्वारा सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से नर्सिंग प्रशिक्षण दिया जा रहा है। 17 जुलाई 2017 को 7वें बैच का शुभारभ किया गया। दिनांक 8 सितम्बर को नर्सिंग छात्राओं के लिए शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की शुरुआत नर्सिंग छात्राओं द्वारा गाए प्रार्थना गीत द्वारा हुई।

समारोह में दीप प्रज्जवलित मुख्य अतिथि सेंट लॉरेन्स सेमीनरी के चर्च के फादर मून लाजरस व हॉस्पीटल की प्रशासिका सिस्टर ग्रेसी, सिस्टर डेजी, सिस्टर डेनिस, सिस्टर प्रीति और श्रीमती मोली जोस व श्री अजय कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि फादर मून लाजरस ने पवित्र बाईबिल से एक पाठ पढ़ा। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि हमें निःस्वार्थ होकर मरीजों की सेवा करनी चाहिए।

Kishori Sangathan Day and the Nativity of Blessed Virgin Mary Celebrated in Cathedral Parish

Kishori Sangathan day was celebrated on Friday, 8 Sept. 2017, on the feast of the Nativity of Blessed Virgin Mary, in Cathedral parish. The celebrations began with the Holy Eucharistic celebration at 06.00 pm in Cathedral. The Archbishop was the Chief Celebrant. Many priests were also present. The members of Kishori Sangathan participated in the entrance procession along with the Archbishop and the priests. The Kishori Sangathan extended a warm welcome to the Eucharistic celebration. The members of the Kishori Sangattan organised the Liturgy under the guidance of their animators Sr Dorothy Tirkey and Mrs.Nirmala John. During the homily the Archbishop exhorted everyone to

be very close to Jesus and Blessed Virgin Mary. Special prayers were said for all the girl children. All the members of the Kishori Sangattan participated in the Offertory Procession. After the Communion Service, the Archbishop officially welcomed the new members into the Kishori Sangattan by putting a blue scarf around their shoulders and congratulated all the members of the Sangattan.

After the final blessing there was a Marian Procession in Cathedral campus in honour of Blessed Virgin Mary. Everyone participated in the Marian procession praying the Holy Rosary. The members of Legion Mary Society organised the Marian procession. The Marian Procession was concluded at the Grotto behind the Cathedral Church. With the final blessings and distribution of sweets the celebrations came to an end.

Fr. Joseph Pindikanayil

Cathedral Parish Pastoral Council New Members Sworn in

On Sunday, 3 Sept. 2017, the new Parish Pastoral Council Members were sworn in in the Cathedral Parish. Rev Fr Joe Thykkattil, Parish Priest led the ceremony. There are altogether 54 members in the new Parish Pastoral Council. There are Ex- officio Members, Elected Members and Nominated Members. During the Holy Eucharistic celebration the new members took the oath. After the Holy Eucharistic celebration the first meeting of the new Parish Pastoral Council Members was held in the Cathedral. Rev Fr Joe Thykkattil, Parish Priest and President of the Parish Pastoral Council presided over the meeting. He thanked the outgoing Parish Pastoral Council Members and extended a welcome to all the new members. He also explained the duties and privileges of the Parish Pastoral Council Members. During this meeting Mr Neville Milton, Dr A.P. Antony and Dr Leena Lazar were elected the Vice-President, Secretaryand Joint Secretary of the Parish Pastoral Council respectively. On behalf of the newly elected Office Bearers, Mr Neville Milton addressed the gathering and thanked everyone for electing them to the Office. With a concluding prayer by the new Vice-President Mr Neville Milton and with a Tea Party, the meeting came to an end.

Fr. Joseph Pindikanayil

सेंट थॉमस पल्ली, आगरा में मातृ दिवस, माता मरियम का जन्मदिन एवं कन्या बाल दिवस मनाया गया

3 सितम्बर को सेंट थॉमस पल्ली, सिकन्दरा में **मातृ दिवस** मनाया गया। इस अवसर पर चर्च में उपस्थित माताओं का सम्मान किया गया। उसके बाद मिस्सा बलिदान पल्ली पुरोहित फादर जोसफ रोड्रिग्ज द्वारा चढ़ाया गया। फादर ने बड़े ही सुन्दर ढंग से माता मरियम का उदाहरण देकर लोगों के जीवन में माँ के महत्व के बारे में बताया।

8 सितम्बर को पल्ली में फादर अरुण लसरादो के नेतृत्व में माँ मरियम का जन्म दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पल्ली के कुछ परिवारों ने भण्डारे का आयोजन किया, जो शाम 3 बजे से आरम्भ होकर शाम 6 बजे तक आम जनता के लिए चला। सायं

6 बजे फादर अरुण लसरादो द्वारा रोजरी माला के साथ जुलूस निकाला गया और मिस्सा बलिदान चढ़ाया गया। सायं लगभग 7.30 बजे पल्लीवासियों के लिए पुनः भण्डारे की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

10 सितम्बर को पल्ली में **कन्या बाल दिवस** मनाया गया। फादर अरुण द्वारा मिस्सा के बाद बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पैरिश की बच्चियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

जौनसन जनेबियुस, सिकन्दरा, आगरा

आगरा डिस्ट्रिक्ट काउन्सिल ऑफ चर्चेज़ का चुनाव (द्विवार्षिक 2017-19) सम्पन्न

आगरा डिस्ट्रिक्ट काउन्सिल ऑफ चचेज़ के द्विवार्षिक सत्र (2017-19) हेतु चुनाव 11 सितम्बर 2017 को सेन्ट्रल मैथोडिस्ट चर्च, एम. जी. रोड, आगरा में सम्पन्न हो गया।

सर्वप्रथम फादर ई. मून लाज़रस द्वारा परमेश्वर पिता से प्रार्थना की गयी। तदुपरान्त सचिव श्री नोरमन थॉमस द्वारा पिछली मीटिंग की रिपोर्ट तथा गत द्विवार्षिक सत्र 2015-17 में ए.डी.सी.सी द्वारा किये गये कार्यों की विस्तृत समीक्षा करते हुए रिपोर्ट पढ़ी। उपस्थित कमेटी के सभी सदस्यों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की व करतल ध्वनि से रिपोर्ट की एक-एक प्रति ग्रहण की। सदस्यों ने सचिव के प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया एवं रिपोर्ट की संस्तुति की।

श्री नोरमन थॉमस ने समिति के कार्यों का विवरण देते हुए बताया कि, समिति प्रतिवर्ष ईस्टर की भोर में सभी ईसाइयों की संयुक्त प्रभात फेरी (डॉन सर्विस) का आयोजन करती है। इसमें शहर के सभी चर्चेज़ से लोग भाग लेते हैं। वर्ष में दो बार (मई और नवम्बर में) रक्तदान शिविर, मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह, संयुक्त क्रिसमस जुलूस एवं गणतन्त्र दिवस पर राष्ट्र के लिए विशेष प्रार्थना सभा आयोजित करती है।

चुनाव प्रक्रिया से पहले अध्यक्ष रेव्ह. जिब्राइल दास ने कमेटी के संविधान, उद्देश्य एवं सदस्य शुल्क की अनिवार्यता के बारे में बताया। इस चुनाव में आगरा शहर के सभी चर्चों के पुरोहित इंचार्ज अपने दो-दो प्रतिनिधियों के साथ उपस्थित थे। किन्हीं कारणों से सेन्ट्रल मैथोडिस्ट चर्च, सेंट जार्जेस कथीड्रल व सेंट जॉन्स चर्च, सिकन्दरा के पुरोहित न स्वयं थे और न ही उनके प्रतिनिधि ही उपस्थित थे। सर्वसम्मति से चुने गये पदाधिकारी व सदस्य निम्न प्रकार हैं:— रेव्ह. जिब्राइल दास (अध्यक्ष), रेव्ह. होरिस एच. लाल (उपाध्यक्ष), रेव्ह. अनिल बी. लाल (उपाध्यक्ष), श्री नोरमन थॉमस (सचिव), डा. नेलसन सिंह (सह-सचिव), श्री प्रवीन कुमार मिश्रा (कोषाध्यक्ष), श्रीमती निशी अगस्टीन व डेनिस सिल्वेरा (मीडिया प्रभारी), श्रीमती ईस्थर थॉमस, कु. रोज़लिन रोज़ारियो, कमल कुमार लायल, अनुपम डेविड, डॉ. राजू थॉमस, पी. टोपनो, अजय कुमार दास, अमित चार्ल्स बेकन, पास्टर विशाल किण्डर, सुभाषचन्द्र, दिनेश सागर, विक्टर सिंह, अमित प्रसाद, लॉरेन्स मसीह, मोजेज सैमूएल, एलेक्जेन्डर इमैन्यूल, आइजेक इमैन्यूल (सभी सदस्य)

समिति आगामी 7 नवम्बर को विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन कर रही है, जिसमें आप सब बढ़ चढ़कर भाग लें और अपने रक्तदान से दूसरों की जान बचाएं। प्रभु अपनी स्वर्गिक आशीर्षो से हम सबको आशीषित करे। **नोरमन थॉमस, (सचिव) ए.डी.सी.सी.**

सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद में हिन्दी सप्ताह का आयोजन

सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, भरापुर, फतेहाबाद में हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर छात्रवर्ग ने वर्णमाला के वर्णों की अध्यापिका द्वारा रचित कविता पर अभिनय किया। विद्यालय में सुलेख, भाषण और थम्ब प्रिंट प्रतियोगिताओं

के आयोजन किये गये। विद्यार्थियों को वर्णों के उच्चारण पर बल देने, सही उच्चारण करने एवं लिखने पर ध्यान देने के लिये प्रेरित किया गया।

उन्हें बताया गया कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हमें उसका सम्मान करना चाहिये। भाषा हमारे विकास के लिये जरुरी है। कोई भी भाषा हो हमें उसके नियमों के अनुसार ही उसे जानना और समझना चाहिये। कक्षा एल. के.जी. से कक्षा 3 तक के बच्चों ने हिन्दी दिवस कार्यक्रम में भाग लिया। हिन्दी विभाग द्वारा सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ दी गई।

Community Day Celebrations at San Damiano Convent, Agra

17th September was a Blessed Day for the San Damiano Community, Agra. It was the day when all the Priests and Religious had a get together and shared their fraternal love and joy. On this auspicious day, the feast of the Patron of our Convent, we remembered the Stigmata by St. Francis.

Like an artisan selecting a precious marble, the Holy Spirit chose the flesh of the Assisian, Seraph St. Francis to be the first to receive the Stigmata of our Blessed Lord. St. Thomas who was in prayer and fasting on Mount Alveinia, just prior to the feast of the Exaltation of the Cross, had fasted for forty days in honour of the Archangel, St. Michael. On the feast, he saw what appeared to be a Seraph, with six shining wings, coming down from heaven. The vision flew swiftly through the air and approached the man of God, who then perceived that it was not only winged, but also crucified; for, the hands and feet were stretched out and fastened to a Cross; while the wings were arranged in a wondrous manner, two wings raised above the head, two outstretched in flight and the remaining two, crossed over and veiling the whole body. After a mysterious and familiar colloquy, the vision disappeared, leaving the saint's flesh with an exact image of the Crucified Lord.

Thus commemorating the imprints received by St. Francis, we the Franciscans, reminisced on September 17th the Feast of the Stigmata of St. Francis.

We, the Sisters of San Damiano Convent celebrate the 17th September, every year, as our Community Day. When all the Priests and Religious of Agra Region come for a get together in our convent. It started with a small prayer service, where we emphasized the receiving of the Stigmata by St. Francis from the Lord and thus, he is called the Second Christ. After the prayer service, we had a small game, which was enjoyed by every one. And then, we moved to the Banquet Hall for the Agape.

We, the San Damiano Community are very grateful, happy and thankful to each one for their presence and joining us in a spirit of warmth and love.

Sr. Sherly, FCC

आरोग्यदायिनी स्वास्थ्य की माता वेलांकनी के वार्षिक समारोह में विशेष प्रार्थनाएं सम्पन्न

आगरा। रोमन कैथोलिक समाज ने रविवार 24 सितम्बर को आरोग्यदायिनी स्वास्थ्य की माता वेलांकनी की प्रतिमा स्थापना की ग्यारहवीं वर्षगांठ भक्ति और उल्लास से मनायी। श्रीमती आइलिन नाडर के प्रार्थनालय भवन 195–ए, वैस्ट अर्जुन नगर, आगरा पर विशेष प्रार्थना सभा एवं रोजरी माला

विनती की गयी, भजन गायन भी हुआ। इसमें सेंट पैट्रिक चर्च के सहायक पल्ली पुरोहित फादर जेवियर, सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी के फादर राजनदास एवं फादर मून लाज़रस और कनोसा धर्मसमाज की धर्मबहनों के अलावा बड़ी संख्या में विश्वासीजनों ने भाग लिया।

''माँ का हम सबके जीवन में एक विशेष स्थान होता है। माँ हमें सदाचरण का पालन करने और धर्म का मार्ग अपनाने को प्रेरित करती है।'' माता मरियम की पवित्र प्रतिमा के सम्मान में आयोजित प्रार्थना सभा में उपस्थित विश्वासियों फादर ज़ेवियर ने सम्बोधित किया।

श्री डेनिस सिल्वेरा ने बताया कि श्रीमती आइलिन नाडर के प्रार्थनालय भवन पर वेलांकनी माता की मूर्ति स्थापना की बारहवीं वर्षगांठ के अवसर पर रखी गयी इस विशेष माला विनती समारोह एवं प्रार्थना सभा में नगर के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग डेढ़ सौ लोगों ने भाग लिया। प्रार्थना सभा के दौरान हाथों में जलती मोमबत्तियां लेकर माला जपते एवं भजन गाते हुए भक्तों ने समाज व देश में शांति, एकता और भाइचारे की मन्नते मांगी।

श्रीमती मारग्रेट नाडर एव श्री ओबरी नाडर ने बताया कि विगत लगभग चार सौ वर्ष पूर्व मद्रास के वेलांकनी गांव में माता मरियम ने दर्शन देते हुए अनेक लोगों को असाध्य रोगों से मुक्ति दिलायी थी। तभी से वह स्थान तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता है। जो विश्वासी वहां नहीं जा पाते हैं उनके लिए यहीं पर प्रार्थना सभा एवं शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है। **डैनिस सिल्वेरा**

ऐतिहासिक गिरजाघर में पुरोहिताभिषेक सम्पन्न

आगरा 1 अक्टूबर। आगरा महाधर्मप्रांत के लिए और विशेषकर आगरा के समस्त ईसाई समाज के लिए रविवार का दिन विशेष हर्षोल्लास का अवसर रहा, जब महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा द्वारा दो उपयाजकों श्रद्धेय जूड एन्थोनी एवं श्रद्धेय लुईस खेस को पुरोहित अभिषिक्त किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ''पुरोहित ईश्वर और सामान्य जनता के बीच एक सेतु की भांति होता है। उसका मुख्य कार्य ईश्वर के वचन की घोषणा करना होता है।''

170 वर्ष पुराने महागिरजाघर में सोलह जिलों के विभिन्न क्षेत्रों से विशाल संख्या में विश्वासी उपस्थित थे। दोनों उम्मीदवारों सहित करीब बहत्तर पुरोहितों के साथ धर्माध्यक्ष ने खचाखच भरे विशाल गिरजाघर में प्रवेश किया। उम्मीदवारों के माता-पिता एवं अन्य परिजनों ने उन्हें महाधर्माध्यक्ष को सौंप दिया। तत्पश्चात महाधर्माध्यक्ष ने उनकी स्वेच्छा के सम्बन्ध में सहमति प्राप्त की। तब दोनों को आजीवन ब्रह्मचर्य एवं आज्ञापालन की शपथ (पुरोहितिक व्रत) धारण कराया तथा आशीष के पवित्र तेल से उनका अभिषेक किया। उपस्थित सभी पुरोहितों ने परंपरा का अनुसरण करते हुए उनके सिरों पर हाथ रखकर ईश्वर से प्रार्थना की एवं पूजा के पवित्र वस्त्र धारण कराए।

पूजा विधि का संचालन फादर जोसफ पिण्डीकनाइल ने किया। इस अवसर पर सिस्टर ग्रेसी, सर टोमी एवं फादर राजनदास और उनकी गायन मण्डली ने सुन्दर गीतों के माध्यम से भक्तिभावना में चार चाँद लगा दिए। पुरोहिताभिषेक के तुरंत बाद सेंट पीटर्स कॉलेज में एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन कर नव पुरोहितों का सम्मान किया गया।

Archdiocese At A Glance

सेंट मेरीज़ स्कूल/छात्रावास, एटा में किशोरी संगठन समारोह मनाया गया

8 सितम्बर को रोमन कैथोलिक कलीसिया ने निष्कलंक माता मरियम के जन्म दिवस पर किशोरी संगठन समारोह भी मनाया।

सर्वप्रथम सारा बेंजामिन द्वारा किशोरी संगठन के बारे में बताया गया। हमारे पुरुष प्रधान समाज में लड़कियों के महत्व को प्रकाशित किया गया। हमारा समाज इस विषय में किस तरह हमारी किशोरियों की मदद कर सकता है इस पर चर्चा हुई। हमारे धर्माध्यक्ष आदरणीय डॉ. आल्बर्ट डिसूजा ने इस विषय में अपने सुन्दर विचार प्रकट किए और बताया कि समाज में आज किशोरियां पुरुषों के बराबर योगदान देती हैं।

इस समारोह में कुछ नई किशोरियाँ भी संगठन से जुड़ीं। हमारे धर्माध्यक्ष ने मिस्सा चढ़ाई, जिसमें अन्य धर्मगुरु भी शामिल हुए। मिस्सा के बाद जुलूस निकाला गया और समारोह का समापन हुआ।

सारा बेंजामिन, सेंट मेरीज़ स्कूल, एटा

टूण्डला में विश्व कन्या दिवस मनाया गया

''प्रत्येक कन्या ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, हमें उनको प्यार, आदर, सम्मान तथा समान अधिकार देने चाहिए।''

10 सितम्बर 2017 को रविवार के दिन होली फैमिली चर्च, टूण्डला में गर्ल चाइल्ड डे मनाया गया। माता मरियम के जन्म दिवस को पूरे विश्व के चर्च में इस पावन दिन को बालिकाओं के नाम समर्पित किया गया है। इस दिन सभी बालिकाओं को आदर, सम्मान व प्यार दिया जाता है। यह दिवस हमें एक सीख भी देता है कि हमें समाज में बालिकाओं के महत्व को समझना चाहिए। समाज में बालिकाओं के प्रति बढ़ते हिंसात्मक अपराध जैसे– भेदभाव, अत्याचार, दहेज प्रथा, परिवारों तथा समाज के द्वारा शोषण, भ्रूण हत्या, बलात्कार आदि होते हैं। हमें समाज में व्याप्त इन कुप्रथाओं के प्रति जागरुक होकर इन्हें जड़ से समाप्त करना है। यह तभी हो पाएगा जब सब लोगों की सोच में बदलाव आएगा। बालिकाओं तथा महिलाओं को स्वयं आगे खड़े होकर समाज में बदलाव लाना है, जिससे बालिकाओं के प्रति यह शोषण समाप्त हो।

इसी उपलक्ष्य में हमारे चर्च में यह दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य याजक थे मसीह विद्यापीठ के फादर स्टेनी रॉड्रिग्ज़। उन्होंने हमारे लिए विशेष मिस्सा बलिदान चढ़ाया। सर्वप्रथम सभी कन्याओं द्वारा फादर एण्ड्रयू कोरिया, फादर विनीश जोसफ व फादर स्टेनी रोड्रिग्ज की आरती उतारी गई। सभी बालिकाओं को मोमबत्ती जलाकर पवित्र वेदी तक ले जाया गया। तत्पश्चात मिस्सा चढ़ाया गया। पवित्र बाईबिल से पाठ पढ़े गये। फादर स्टेनी ने बालिकाओं की वर्तमान स्थिति पर सशक्त प्रभावशाली प्रवचन दिया। फादर स्टेनी ने बताया कि बाईबिल में 1503 बार 'बच्चे' शब्द का प्रयोग किया गया है। लेकिन हम बच्चों को भी दो वर्गों लड़का या लड़की में बांटते है तथा उसी के

अनुसार उनके साथ व्यवहार करते हैं। कन्या दिवस भारत में 24 जनवरी को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी जी ने उस समय समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, शिक्षा की कमी आदि के बारे में जागरुक करते हुए स्थापित किया था। इसी सम्बन्ध में यह मनाया जाता है। चर्च में माता मरियम के जन्म दिवस को बालिका दिवस को समर्पित किया गया है। हमें बालिकाओं को प्रेम, आदर, सम्मान देना चाहिए। तत्पश्चात महिलाओं द्वारा निवेदन प्रार्थनाएं पढ़ी गईं। धन्यवाद की प्रार्थना श्रीमती मधुमिता के द्वारा पढ़ी गई। बालिकाओं को फादर स्टेनी द्वारा उपहार भेंट किए गए। अंत में हम मिस्टर सनी विलियम का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने जलपान की व्यवस्था की। सभी ने भक्तिभाव से जलपान ग्रहण किया।

क्रिस्टीना विलियम, होली फैमिली चर्च, टूण्डला

14 सितम्बर 2017 हिंदी दिवस समारोह

जीसस एण्ड मेरी कॉनवेंट स्कूल, ग्रेटर नोएडा में हिंदी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आज के दिन विद्यालय में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन तो किया ही गया साथ ही हिंदी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों तथा ग्रेटर नोएडा के अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों को पदक एवं प्रमाणपत्र द्वारा सम्मानित भी किया गया।

प्रात: 7:30 बजे मुख्य अतिथि श्रीमती सुनीति (एस. पी.), एस. पी. शर्मा (अध्यक्ष, इंडस्ट्रीयल एसोसिएशन) एवं सुश्री लूसी गैब्रियल (एडीटर, बुलंद प्रजातंत्र), सेंट जोसफ स्कूल, ग्रेटर नोएडा के प्रधानाचार्य फादर मैथ्यू तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य फादर सेबास्टियन तथा प्रबंधक फादर थॉमस की उपस्थिति में सभी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अलीगढ़-एटा की महिलाओं के लिए यादगार दिन

10 सितम्बर अलीगढ़ पल्ली की महिलाओं के लिए बहुत यादगार था। अलीगढ़ से 22 महिलाएं अपने पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर ग्रेगरी और ब्रदर लुईस खेस के साथ बस में सुबह की ठण्डी हवाओं से बाते करते हुए एटा की ओर चल दीं। सभी ने बस में ही छोटी प्रार्थना की। फिर गाना गाते, बतियाते सिकन्दराराऊ पहुंचे। 10 मिनट के लिए एक ढाबे पर हमारी बस रुकी। वहां सभी महिलाओं ने अपने-अपने खाने के डिब्बों को खोला। ऐसा लग रहा था, मानो छप्पन भोग हों। सभी ने मिलजुल कर नाश्ता किया और जिन्हें चाय की चुस्की लेनी थी उन्होंने चाय ली। फिर वह काफिला एटा की ओर चल दिया। 9 बजे पल्ली के द्वार पर ज्यो ही हमारी बस पहुंची, तो एटा के पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर राफी, सिस्टर्स एवं पल्लीवासियों ने हमारा स्वागत किया।

गिरजाघर के प्रवेश द्वार पर एटा के महिला संघ की सदस्यों ने तिलक लगाकर हमारा स्वागत किया। हम सभी ने एक साथ मिलकर मिस्सा बलिदान में भाग लिया। उस दिन का मिस्सा सभी महिलाओं के लिए था। फादर राफी, फादर ग्रेगरी और ब्रदर लुईस खेस ने हमारे लिए ये मिस्सा बलिदान चढ़ाया। मिस्सा के बाद फादर के घर में चाय का इंतजाम था। इसके बाद हम सभी असीसी कान्वेन्ट स्कूल के हॉल में एकत्रित हो गये। कार्यक्रम की शुरुआत एटा की महिलाओं ने स्वागत गीत के साथ की। हम सभी ने अपना परिचय दिया। इसके बाद अलीगढ़ महिला मण्डल की तरफ से कुछ खेलों का आयोजन किया गया। तत्पश्चात विजेताओं को उपहार

दिये गये। खेल समाप्ति पर हम सभी ने एक साथ लज़ीज भोजन किया। ऐसा लग ही नहीं रहा था, कि हम किसी दूसरी पल्ली में आए हैं। कैसे समय बीत गया पता ही नहीं चला। फिर वहां से विदा लेकर तथा एटा की महिला मण्डल को अलीगढ़ आमंत्रित कर हम बालिका भवन की ओर चल दिए। वहाँ हम सिस्टर्स एवं बच्चों से मिले। 72 बच्चे एक परिवार जैसे वहां रहते हैं। वहां की साज-सज्जा और बच्चों की मधुर आवाज ने हम सभी को मोहित कर दिया। फिर हमने बच्चों को टाफियां दीं और वापस बस में बैठकर अलीगढ़ के लिए रवाना हो गये। बस में खूब मस्ती करते हुए सायं 4.30 बजे अलीगढ़ पहुंचे। आगे भी इसी तरह के आयोजन की उम्मीद के साथ होठों पर मुस्कराहट लिये हम सभी अपने-अपने घर को चल दिये।

जयन्ती बारला, संत फिदेलिस चर्च, अलीगढ़

आध्यात्मिक साधना के छात्रों द्वारा आगरा दर्शन

बृहस्पतिवार, 14 सितम्बर का दिन हम आध्यात्मिक साधना विभाग (मसीह विद्यापीठ, एत्मादपुर, आगरा) के छात्रों के लिए एक यादगार दिन था। इस दिन हम ताजमहल सहित आगरा के अन्य ऐतिहासिक भवनों का प्रथम बार अवलोकन करने के लिए आगरा शहर गए।

बाहर से आए छात्र हमसे अक्सर पूछा करते थे कि ताजमहल कहाँ है? कैसा है? आदि बातें पूछकर हमें रोजाना परेशान करते थे। अन्ततः 14 सितम्बर को उनका इंतजार खत्म हुआ और प्रातः आगरा दर्शन के लिए निकले। सुबह के शांत वातावरण में हमने ताजमहल के दर्शन किए... अद्भुत और अतुलनीय! भव्य और अद्वितीय...। बहुतों ने ताजमहल दर्शन को अपने जीवन का स्वर्णिम क्षण जाना। ताजमहल के बाद हम आगरा किला देखने गए। वहाँ की ऊंची-नीची दीवारें और बड़ी-बड़ी इमारतें बरबस हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। किला देखने के बाद हम सम्राट अकबर की समाधि देखने गए।

अंत में हम आगरा महाधर्मप्रान्त के सेंट लॉरिन्स सेमीनेरी (लघु गुरुकुल) गए। सेंट मेरीज़ चर्च में हमने पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लिया। सेमीनेरी में भोजन के बाद हमें अंग्रेजी फिल्म "**सिस्टर एक्ट**" दिखाई गई। तत्पश्चात हमने अपने छोटे भाइयों के साथ '**फ्रैण्डली बॉस्केटबाल मैच**' खेला। रोमांचकारी मैच में हमने आसानी से हार मान ली। धन्यवादी हृदय से हम आभार प्रकट करते हुए सायं करीब साढ़े सात बजे वापिस अपने गुरुकुल आ गए। हम अपने आयोजकों, उपकारकों, गुरुजनों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं।

ब्रदर स्वपनिल डाबरे, मसीह विद्यापीठ, आगरा

स्कूल बच्चों के लिए एच.आई.वी./एड्स और टी.बी. पर प्रशिक्षण का आयोजन

12 अगस्त 2017 को आगरा कैथोलिक डायोसिस समाज सेवा संस्था द्वारा संचालित महिला सशक्तिकरण परियोजना, बरौली अहीर ब्लॉक के श्यामो गाँव के भूपेन्द्र कन्या इण्टर कॉलेज में किशोर एवं किशोरियों के लिए HIV/AIDS & T.B. पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें किशोर एवं किशोरियों को बताया कि HIV एक वायरस है और AIDS एक बीमारी। प्रशिक्षक महोदया ने इस बीमारी फैलने के कारण, लक्षण, बचाव, भ्रान्तियाँ एवं इलाज के बारे में बताकर जागरूक किया गया साथ ही किशोर एवं किशोरियों को टी०बी० बीमारी के लक्षण, जाँच एवं ड्राटस केन्द्र के माध्यम से निःशुल्क इलाज के बारे में जानाकरी दी गई। इस प्रशिक्षण में 150 किशोर एवं किशोरियों ने भाग लेकर HIV/AIDS & T.B. के प्रति जानकारी प्राप्त की।

इस प्रशिक्षण की प्रशिक्षिका सिस्टर वेरोनिका (कार्यक्रम प्रबन्धक) थी। साथ ही श्री यशपाल एवं श्री अशोक कुमार (समन्वयक) का सहयोग रहा।

किशोरी दिवस का आयोजन

10 सितम्बर 2017 को आगरा कैथोलिक डायोसिस समाज सेवा संस्था द्वारा संचालित महिला सशक्तिकरण परियोजना, बरौली अहीर ब्लॉक के सेन्ट क्लेयर्स स्कूल, कौलक्खा में किशोरी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय– 'सामाजिक परिवर्तन हेतु किशोरी सशक्तिकरण' था। कार्यक्रम की अध्यक्षता फादर शिबू कुरियाकोस (निदेशक, ए.सी.डी.एस.एस.एस. समाज सेवा संस्था) ने की। मुख्य अतिथि सुश्री पेन्सी थॉमस (आगरा धर्मप्रान्त की सचिव), विशिष्ट अतिथि फादर शिजू (प्रधानाचार्य, सेन्ट क्लेयर्स स्कूल, कौलक्खा), श्रीमती मौली जोस (स्वास्थ्य विभाग, फातिमा हॉस्पीटल), सिस्टर वल्सा (सिस्टर सुपीरियर), सिस्टर मेरी (अध्यापिका), सिस्टर सोफिया (अध्यापिका), कु. नेहा शर्मा (एकाउन्टेन्ट, ए.सी.डी.एस.एस.एस.) एवं श्री भरत सिंह (पूर्व प्रधान एवं समाज सेवी) रहे। कार्यक्रम में कुल 550 किशोरियों ने भाग लिया।

रमन कुमार, ए.सी.डी.एस.एस.एस., आगरा

राष्ट्रीय प्रार्थना दिवस पर प्रार्थना सभा सम्पन्न

आगरा 2 अक्टूबर। पिछले कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी राष्ट्रीय प्रार्थना दिवस के अवसर पर देश के विभिन्न मसीही गिरजाघरों, स्कूल-कालेजों वं संस्थाओं में देश में अमन, शांति और भाईचारे के लिए विशेष प्रार्थना सभाओं का आयोजन किया गया। मसीही लोगों ने उपवास किए और घण्टों प्रार्थना में व्यतीत किए।

इस अवसर पर राष्ट्र के लिए मसीही लोगों की प्रार्थना दल अथवा समिति के तत्वावधान में शमसाबाद मार्ग स्थित फेथ चर्च में सायं चार बजे से छः बजे तक शहर के विभिन्न गिरजाघरों, मसीही स्कूल-कॉलेजों एवं संस्थाओं से लोगों ने भाग लिया। देश में सांप्रदायिक सद्भाव बनाने व भाईचारा स्थापित करने के उद्देश्य से देश में प्रार्थना दल/समिति की पांच वर्ष पूर्व स्थापना की गई। स्थानीय समन्व्यक व प्रदेशीय कोर्डिनेटर डा. राजू थॉमस ने बताया कि वर्तमान युग में देश में शांति और भाईचारे की बहुत आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस राष्ट्रीय प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

National International **NEWS** National International

Kidnapped Indian priest Fr. Tom Uzhunnalil freed after 18 months

Kidnapped Indian priest Fr Tom Uzhunnalil has been freed from captivity and flown to Oman, the country's government has said.

Fr Tom was kidnapped when his care home in the Yemeni city of Aden was attacked in March 2016. Four gunmen posing as relatives of one of the residents killed four Indian nuns, two Yemeni staff members, eight elderly residents and a security guard.

In May this year, a video was posted online showing the priest in poor health, calling for help. "My health condition is deteriorating quickly and I require hospitalisation as early as possible," he said.

Now the Omani government reports that it has found and freed Fr Tom.

The sultanate said in a statement: "In response to the Royal Orders of His Majesty Sultan Qaboos bin Said and as per a request from the Vatican to assist in the rescuing of a Vatican employee, the concerned authorities in the Sultanate, in coordination with the Yemeni authorities, have managed to find a Vatican government employee.

"He was transferred this morning to Muscat in preparation for his return home."

Divine Services in the Churches of Agra City

- **Cathedral of the Immaculate Conception**
  (Near St. Peter's College),
  Wazirpura Road, Agra - 282 003 (U.P.)
  Phone: 0562-2524806
  Sunday Masses: 6.30 (Eng.)
  & 8.00 a.m. (Hindi)
  Daily Evening Mass: 5.30 p.m. (Hindi)

- **Church of Pieta**
  (Emperor Akbar's Church)
  (Near St. Peter's College), Wazirpura Road,
  Agra - 282 003 (U.P.)
  Phone: 0562-2524806
  Daily Evening Mass: 5.30 p.m. (Hindi)

- **St. Mary's Church**
  (Near Mother Teresa's Home)
  Pratappura, Agra - 282 001 (U.P.)
  Phone: 0562-2463505
  Sunday Masses: 8.00 a.m. (Eng.)
  & 5.30 p.m. (Eng.)
  Saturday Evening Mass: 5.30 p.m. (Eng.)
  First Friday Mass: 5.30 p.m. (Eng.)

- **St. Patrick's Church**
  118, Prithvi Raj Road, Agra - 282 001 U.P.
  Phone: 0562-2225266
  Sunday Mass: 7.30 a.m.
  Saturday Evening Mass: 5.30 p.m.
  First Friday Mass: 5.30 p.m.

- **Sts. Simon & Jude Church**
  (Near Canara Bank)
  Kaulakha, Devri Road, Agra
  Mobile: 8755984402
  Sunday Mass: 7.30 a.m. (Hindi)

- **St. Thomas' Church**
  C/o St. Francis School
  UPSIDC, Sikandra
  Agra - 282 007
  Phone: 9411058172
  Sunday Masses: 8.00 a.m. (Hindi)
  First Friday Mass: 6.00 p.m. (Hindi)

GOOD NEWS... FOR YOU...!

Dear Parents/Guardians

If you are looking for a suitable Christian Match for your son or daughter, then be assured that your search is now over.

Just, click once and have a proper and perfect match in a Christian family. A suitable website - www.arcmatrimonial.com has been launched by the Catholic Bishops of U.P., Rajasthan and Uttrakhand states.

Do visit this website before you finalise anything for your son or daughter. If your have any query, do contact us at : **arcmagra@gmail.com or 08081195486 (Fr. Tony)**

The Agra Deanery Bible Festival:2017

on Sunday, 8 Oct. 2017, 8 a.m. onwards

8:30 a.m. Holy Mass at St. Jude's Church, Agra

Lunch and Refreshment will be provided.

For more details please contact:

Rev. Fr. Xavier G. (Secretary)
Agra Deanery Priests' Council
Mobile : 7599512415

अक्टूबर महीने का दैनिक पंचांग

रवि	वर्ष का 26वाँ रविवार **1** ऐज़े 18:25-28; फ़िलि 2:1-11 मत्ती 21:28-32	वर्ष का 27वाँ रविवार **8** इसा 5:1-7; फ़िलि 4:6-9 मत्ती 21:33-43	वर्ष का 28वाँ रविवार **15** इसा 25:6-10; फ़िलि 4:12-14, 19-20; मत्ती 22:1-14	विश्व मिशन रविवार **22** इसा 45:1-4; 1 थेसे 1:1-5 मत्ती 22:15-21	वर्ष का 30वाँ रविवार **29** निर्गमन 22:20-26 1 थेसे 1:5-10; मत्ती 22:34-40
सोम	रक्षक स्वर्गदूत **2** जकर्या 8:1-8 मत्ती 18:1-5, 10	संत दियोनिस एवं संत योहन लियो नादुस **9** योना 1:1-2, 1, 11 लूकस 10:25-37	सन्त हेडविग और सन्त मार्गरिता मरियम **16** रोमियो 1:16-25 लूकस 11:29-32	कापेस्त्रानो के सन्त योहन **23** रोमियो 4:20-25 लूकस 12:13-21	सन्त जेराल्ड माजेला **30** रोमियो 8:12-17 लूकस 13:10-17
मंगल	सन्त एवाल्ड्स शहीद **3** जकर्या 8:20-23 लूकस 9:51-56	सन्त फ्रांसिस बोर्जिया **10** योना 3:1-10 लूकस 10:38-42	अंताखिया के सन्त इग्नासियुस **17** रोमियो 1:16-25 लूकस 11:37-41	सनत अन्तोनी मरियम क्लारेत **24** रोमियो 5:12, 15, 17-21 लूकस 12:35-38	सनत अल्फोंसस रॉड्रिग्ज़ **31** रोमियो 8:18-25 लूकस 13:18-21
बुध	असीसी के संत फ्रांसिस **4** नेहेम्या 2:1-8 लूकस 9:57-62	सन्त पासीदिया **11** योना 4:1-11 लूकस 11:1-4	सन्त लूकस **18** 2 तिमथी 4:10-17 लूकस 10:1-9	सन्त ताबिता **25** रोमियो 6:12-18 लूकस 12:39-48	
गुरु	सन्त फ्रॉस्टिना कोवाल्सका **5** नेहेम्या 8:1-12 लूकस 10:1-12	यॉर्क के सन्त विलिफ्रड **12** मलाकी 3:13-20 लूकस 11:5-13	सन्त योहन ब्रेबफ व साथी **19** रोमियो 3:21-30 लूकस 11:47-54	सन्त एवारिस्तुस **26** रोमियो 6:19-23 लूकस 12:49-53	
शुक्र	सन्त बूनो एवं धन्य मरिया रोज़ा **6** बारूक 1:15-22 लूकस 10:13-16	सन्त एडवर्ड **13** योएल 1:13-15, 2:1-2 लूकस 11:15-26	क्रूस भक्त सन्त पौलुस **20** रोमियो 4:1-8 लूकस 12:1-7	सन्त फ्रूमेन्तियुस **27** रोमियो 7:18-25 लूकस 12:54-59	
शनि	माला की महारानी **7** बारूक 4:5-12, 27-29 लूकस 10:17-24	सन्त कलिस्तुस प्रथम **14** योएल 4:12-21 लूकस 11:27-28	सन्त हिलेरियन महान **21** रोमियो 4:13, 16-18 लूकस 12:9-12	सन्त सिमोन और यूदा थदेयुस **28** ऐफे 2:19-22 लूकस 6:12-29	

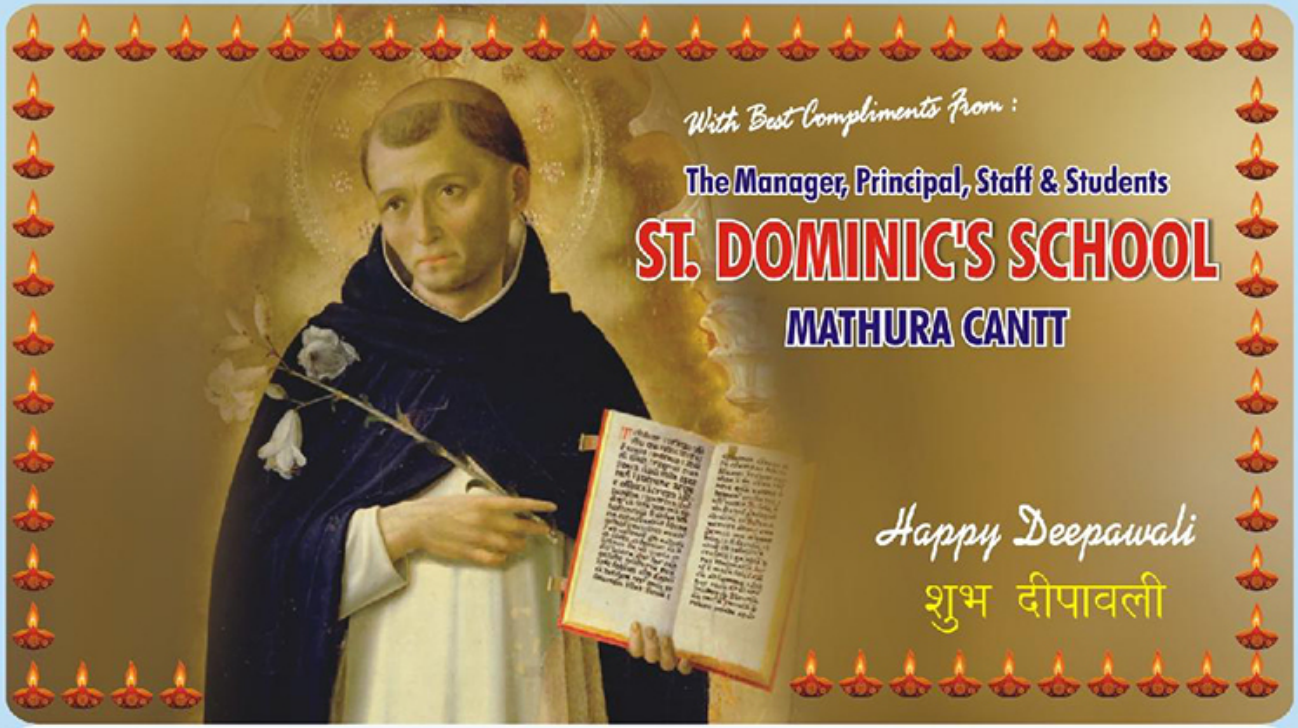

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 2854123

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com

Archdiocese at a Glance

Street Play, ACDSSS

Medical Camp & Kishori Divas Celebration, Fatima Hospital, Agra

Hindi Divas Celebration St. John Paul's School, Jesus & Mary School & St. Joseph's Schools, 14-09-2017, G. Noida

Signis, Agra on Social Media

Kanya Divas Celebration at Holy Family, Tundla & St. Patrick's, Agra

ACDSSS Celebration of Independence Day, HIV & AIDS Training Programs

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Bernardine Jackson, Mrs. Nishi Augustine